04 - मजदूर उपायों की तलाश आज भी कायम

05 - आखिर कब तक मजबूर रहेगा मजदूर

A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 01 मई, 2024

06- दिनों-दिन तूल पकड़ते जा रहा, जनपद के हरे-भरे बगीचे को उखाड़कर दुकान बनाने...

07- दुनिया के बड़े-बड़े देश भारत के विकास में अपना विकास देख...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 233 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है
जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है
वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा।

जो जीवन की आग जला कर आग बना है
फौलादी पंजे फैलाए नाग बना है
जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग के रथ का घोड़ा है
वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा।

- केदारनाथ अग्रवाल

प्रसंगवश

क्या आकाश आनंद बसपा के चेहरे के रूप में उभर रहे हैं ?

शिखा सलारिया

भले ही आकाश आनंद जब सबके सामने आए तो वह काफी कम महत्वपूर्ण कैंपेनर लग रहे थे, लेकिन अगली पीढ़ी के बहुजन समाज पार्टी (बसपा) नेता आकाश आनंद केवल तीन सप्ताह के भीतर एक तेजतर्रार वक्ता के रूप में उभरे हुए प्रतीत होते हैं। हाल ही में, वह 'बड़े पैमाने पर पेपर लीक के पीछे के लोगों को कुचलने' जैसी भावनाओं को आवाज देकर मतदाताओं से जुड़ रहे हैं और लोगों को सत्तारूढ़ भाजपा को उसकी 'औकात' दिखाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

28 वर्षीय आनंद, जिन्हें पिछले दिसंबर में उनकी 'बुआ' मायावती ने बसपा का भविष्य का चेहरा घोषित किया था, 2017 से राजनीति में सक्रिय हैं, जब बसपा उस साल हुए विधानसभा चुनावों में 19 सीटों पर सिमट गई थी। उनके और उनके घटते हुए समर्थन वाली पार्टी के लिए 2024 का आम चुनाव उनके सामने अब तक की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। बीएसपी के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार,आनंद का आगमन पार्टी द्वारा सोशल मीडिया को अपनाने के साथ हुआ, और उन्हें 'बहन जी' को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर जोड़ने के लिए मनाने का श्रेय दिया जाता है, जिसके लिए मायावती तैयार नहीं थीं। मायावती ने 2019 में ट्विटर (अब, एक्स) को ज्वाइन किया था।

बीएसपी एमएलसी भीमराव अंबेडकर ने बताया कि आकाश छोटी उम्र में ही बीएसपी आंदोलन और उसके उद्देश्यों से परिचित हो गए थे। 'पारिवारिक परिवेश के कारण अंबेडकरवादी संस्कार शुरू में ही आ गए।'

आकाश आनंद नोएडा में पले-बढ़े और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के एक प्रमुख निजी स्कूल, पाथवेज़ स्कूल में गए। बाद में वह प्लायमाउथ विश्वविद्यालय में एमबीए करने के लिए इंग्लैंड चले गए। भारत लौटने पर, सात साल पहले मायावती ने उन्हें आधिकारिक तौर पर पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलवाया था, यह लगभग वही समय था जब उन्होंने पूर्व बसपा सांसद राजाराम के पंख कतर दिए थे, जिन्हें कभी उनके उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता था। एक साल बाद, बसपा सुप्रीमो ने जय प्रकाश सिंह जैसे नेताओं पर अपना भरोसा जताया, जिन्हें बाद में राष्ट्रीय समन्वयक के रूप में पदोन्नत किया गया था।

एक पूर्व बसपा सांसद ने कहा, 'बहनजी पहले अपने बड़े भाई सिद्धार्थ कुमार के करीब थीं, जिनकी बेटी को आधिकारिक कार्यक्रमों में भी 'बहन जी' के साथ देखा जाता था। लेकिन 2003 में जब केंद्रीय जांच एजेंसियों ने उनके घर पर छापा मारा था, तब कथित तौर पर उनके भाई ने उनका साथ नहीं दिया, जिसके बाद वह उनसे अलग हो गईं। लंबे समय से, (पूर्व राज्यसभा सदस्य) सतीश चंद्र मिश्रा को पार्टी में वास्तव में नंबर 2 और संभावित उत्तराधिकारी माना जाता था, लेकिन उन्हें भी दरकिनार कर दिया गया। बाद में, उन्होंने अपने छोटे भाई आनंद कुमार को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया।' 2003 में सिद्धार्थ कुमार द्वारा उन्हें छोड़ने के बाद, मायावती के छोटे भाई आनंद कुमार का परिवार उनकी मदद के लिए उनके घर में रहने लगा और इसके बाद पार्टी में उनकी पदोन्नति हुई।

अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक, अब 68 साल की हो चुकीं मायावती को अहसास हो गया है कि युवा चेहरे के अभाव में दलित समुदाय के युवा पार्टी से दूर जा रहे हैं। पूर्वांचल के एक वरिष्ठ बसपा नेता ने कहा कि जहां मायावती पार्टी सुप्रीमो बनी हुई हैं, वहीं दलित और बहुजन युवा एक युवा नेता की तलाश कर रहे हैं और भीम आर्मी प्रमुख चन्द्रशेखर आज़ाद की ओर जा रहे हैं, जिससे उन्हें आकाश को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सिर्फ दलित ही नहीं बल्कि हमारे मूल जाटव मतदाता भी पार्टी से दूर हो गए हैं, जिससे बसपा को नुकसान हुआ है।'

बसपा में आकाश का ऊपर उठना अचानक नहीं, बल्कि धीरे-धीरे हुआ। 2017 में जब उन्हें पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलवाया गया, तो उन्हें कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं दी गई और वे सार्वजनिक बैठकों से दूर रहे। 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले ही आकाश ने आगरा में अपनी पहली सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन के उम्मीदवार के लिए वोट मांगे थे। जब उन्होंने बसपा प्रमुख को 'बुआ जी' कहा तो भीड़ तालियां बजाने लगी और जयकारे लगाने लगी। तब से, बसपा में आकाश की ज़िम्मेदारियां बढ़ती गईं और सितंबर 2022 में, उन्हें गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनावों से पहले बसपा के पक्ष में मतदाताओं को एकजुट करने का काम सौंपा गया, जो पार्टी के भीतर उनकी बेहतर होती स्थिति का संकेत था।

'उन्होंने तीन राज्यों में सार्वजनिक बैठकों के साथ-साथ पार्टी बैठकों को भी संबोधित किया। राजस्थान में उन्होंने 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' यात्रा निकाली। लेकिन यूपी जैसे राज्यों में, जहां पार्टी का अच्छा वोट बेस है, वहां अभी भी सारे निर्णय बहन जी के ही हाथ में हैं। लोकसभा चुनाव आकाश के लिए बहनजी की छाया से बाहर निकलने का एक मंच है।'

लालगंज में आकाश की रैली के दौरान लोगों ने नारे लगाए, 'देखो-देखो कौन आया शेर आया' और 'बसपा की क्या पहचान नीला झंडा हाथी निशान।' उन्होंने नीला गमछा पहनकर मायावती को नकारने वालों को चेतावनी दी। जो कि भीम आर्मी और अन्य पार्टियों के संदर्भ में था। उन्होंने पकौड़े तलने को 'रोजगार' बताने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी पर उनकी बुलडोजर राजनीति के लिए हमला बोला। साथ ही समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और कांग्रेस पर भी निशाना साधा। आकाश ने बताया, 'बहन जी ने युवाओं के लिए बसपा में 50 प्रतिशत पद आरक्षित किए हैं। हम उन सभी को भरने की कोशिश करेंगे।' उन्होंने चन्द्रशेखर आज़ाद के महत्व को ख़ारिज करते हुए कहा कि मीडिया आज़ाद समाज पार्टी के प्रमुख को जरूरत से ज्यादा तवज्जो देता है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार, आकाश के पास अब राजनीति में अपनी पहचान बनाने के लिए एक मंच है, लेकिन उन्हें अभी भी बहुत कुछ साबित करना है, खासकर तब जबकि बसपा की खराब होती स्थिति एक ज़मीनी हकीकत है।

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख शशिकांत पांडेय ने कहा कि आकाश के भाषण देने के अंदाज़ और सार्वजनिक मुद्दों को उठाने की उनकी कला के कारण, जिन लोगों को मायावती पर भरोसा है, उन्हें आकाश में आशा की किरण दिखाई दे रही है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

45 डिग्री तक पहुंचा पारा 'धधक' रहे हैं कई शहर

भीषण गर्मी का कहर जारी,लू ने किया परेशान, घर से निकलना भी मुश्किल

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारतीय राज्यों में इस वक्त भीषण गर्मी का कहर जारी है। चिलचिलाती धूप और लू के थपेड़ों ने लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल कर दिया है। कई शहर लू के थपेड़ों में धधक रहे हैं। इस बीच भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने अगले दो से तीन दिनों के लिए आंध्र प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और ओडिशा समेत कई राज्यों के लिए हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया है। कुछ राज्यों में स्कूलों में कक्षाएं निलंबित कर दी गई हैं। पारा 45 डिग्री तक पहुंच गया है। अपने नवीनतम मौसम बुलेटिन में आईएमडी ने बताया कि

पूर्वी भारत में अगले दो से तीन दिन भीषण गर्मी का कहर होने वाला है। जबकि, अगले पांच दिनों तक दक्षिण प्रायद्वीपीय क्षेत्र में गर्मी जारी रहेगी। आईएमडी ने तेलंगाना, कर्नाटक और सिक्किम के कुछ हिस्सों के लिए ऑरेंज अलर्ट भी जारी किया है।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों की नक्सलियों पर कमर तोड़ कार्रवाई

- मुठभेड़ में 2 महिला समेत 8 नक्सली ढेर

रायपुर (एजेंसी)। बस्तर और कांकेर जिलों की सीमा से लगे जंगलों में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में दो महिलाओं सहित लगभग आठ नक्सली मारे गए हैं। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, मारे गए माओवादियों की संख्या बढ़ सकती है। बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक पी सुदनराज ने इस एनकाउंटर की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र की सीमा पर टेकमेटा और काकुर के जंगल में मुठभेड़ हुई थी। मुठभेड़ के समय एसटीएफ और डीआरजी की एक संयुक्त टीम माओवाद विरोधी अभियान पर निकली थी। टीम ने क्षेत्र में अलग-अलग जगहों पर कार्रवाई की है। पुलिस ने कहा कि घटनास्थल से एके 47, गोला-बारूद और विस्फोटक सहित हथियार जब्त करने के साथ ही माओवादियों के आठ शव बरामद किए हैं।

प्रियंका गांधी का डेब्यू टला ! राहुल पर सस्पेंस बरकरार

24 घंटे में कांग्रेस कर सकती है अमेठी-रायबरेली का फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के दो चरण हो चुके हैं, लेकिन कांग्रेस ने अब तक उत्तर प्रदेश की अमेठी और रायबरेली पर पत्ते नहीं खोले हैं, लेकिन संभावनाएं जताई जा रही हैं कि पार्टी जल्दी दोनों सीटों पर उम्मीदवारों के नामों का ऐलान कर सकती है। कहा यह भी जा रहा है कि प्रियंका गांधी वाड्रा के लोकसभा चुनाव लड़ने की संभावनाएं कम हैं। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के अनुसार, प्रियंका गांधी के 2024 लोकसभा चुनाव लड़ने के आसार कम हैं। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि प्रियंका चुनाव में सिर्फ प्रचार करेंगी। साथ ही कांग्रेस रायबरेली और अमेठी को लेकर 24 घंटों में बड़ा फैसला ले सकती है। अटकलें थीं कि

प्रियंका रायबरेली से मैदान में उतर सकती हैं। उत्तर प्रदेश की दोनों ही सीटें कांग्रेस का गढ़ मानी जाती हैं। हालांकि, 2019 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी का विजय रथ रोक दिया था। बीते चुनाव में राहुल ने केरल की वायनाड सीट से जीत हासिल की थी। इस बार भी वह वायनाड से मैदान में हैं।

पेनल्टी क्यों न लगाएं,बाबा रामदेव के सामने नई मुश्किल

- अब जीएसटी ने भेजा 27 करोड़ का नोटिस,फंस गई पतंजलि

नई दिल्ली (एजेंसी)। पतंजलि समूह की परेशानियां खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। अब पतंजलि फूड्स को जीएसटी यानी वस्तु एवं सेवा कर की तरफ से नोटिस मिला है, जिसमें करोड़ों रुपये के टैक्स क्रेडिट को लेकर सवाल पूछे गए हैं। इधर, मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में अवमानना के मामले में फिर सुनवाई जारी है। योग गुरु बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण अदालत पहुंचे हैं।

खबर है कि पतंजलि फूड्स को जीएसटी इंटेलीजेंस के चंडीगढ़ जोनल यूनिट से यह नोटिस मिला है। कारण बताओ नोटिस के जरिए पूछा गया है कि कंपनी से 27.46 करोड़ रुपये के इनपुट टैक्स क्रेडिट को क्यों नहीं वसूला जाना चाहिए। कंपनी ने कहा, एक शोकॉज नोटिस मिला है।

कर्नाटक सेक्स स्कैंडल

एसआईटी जांच तक जेडीएस नेता प्रज्वल पार्टी से सस्पेंड

- कोर कमेटी की बैठक में हुआ फैसला, कर्नाटक में कोहराम, एसआईटी का हुआ गठन

बेंगलुरु (एजेंसी)। जनता दस (सेक्युलर) ने मंगलवार को हासन से पार्टी सांसद और लोकसभा से उम्मीदवार प्रज्वल रेवन्ना को पार्टी से सस्पेंड कर दिया है। पूर्व सीएम एचडी कुमारस्वामी ने मंगलवार को जेडीएस कोर कमेटी की बैठक की। इसमें प्रज्वल को पार्टी से सस्पेंड करने का फैसला लिया गया। बैठक के बाद जद (एस) कोर कमेटी के अध्यक्ष जीटी देवेगौड़ा ने कहा कि हम प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ एसआईटी बनाने का स्वागत करते हैं। हमने पार्टी

के राष्ट्रीय अध्यक्ष को एसआईटी जांच पूरी होने तक प्रज्वल को पार्टी से सस्पेंड करने को कहा है। वहीं, कुमारस्वामी ने कहा प्रज्वल का सस्पेंशन एसआईटी जांच पूरी होने तक है। मैंने गलत करने वाले का कभी बचाव नहीं किया, लेकिन इस विवाद में पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा का नाम लेना गलत है। कांग्रेस हमारे परिवार में फूट डालने की कोशिश कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रज्वल से जुड़े सवाल के जवाब में गुवाहाटी में कहा- बीजेपी मातृशक्ति के साथ है। इस जांच को आगे बढ़ाएं।

हरियाणा में 190 डेटोनेटर और 4 क्विंटल विस्फोटक बरामद

- राजस्थान से लेकर आया था युवक, पुलिस ने किया गिरफ्तार
- ऑपरेशन आक्रमण के तहत चलाया स्पेशल सर्च अभियान

महेंद्रगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले में पुलिस ने ऑपरेशन आक्रमण के तहत स्पेशल सर्च अभियान चलाया हुआ है। इसी अभियान के तहत महेंद्रगढ़ सीआईए पुलिस की टीमने अवैध खनन करने वालो के खिलाफ कार्रवाई करते हुए सतनाली क्षेत्र से भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ बरामद किया है। पुलिस ने लगभग चार क्विंटल विस्फोटक पदार्थ, 190 डेटोनेटर और 750 मीटर वायर बरामद की है। मामले की जानकारी देते हुए डीएसपी मोहम्मद जमाल ने बताया कि आज जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार हमने ऑपरेशन आक्रमण सुबह पांच बजे शुरू किया था। उसी के तहत हमने पुलिस की अलग-अलग टीमें तैयार की थी। जिस पर महेंद्रगढ़ सीआईए पुलिस की टीम को गुप्त सूचना मिली कि अजीत नाम का एक युवक राजस्थान से विस्फोटक सामग्री लेकर सतनाली क्षेत्र के गांव जेरपुर और उस्मापुर में सप्लाई करने के लिए ला रहा है।

लवली के इस्तीफे के बाद देवेंद्र यादव को मिली कमान

- बने दिल्ली कांग्रेस के नए अंतरिम अध्यक्ष, मल्लिकार्जुन खड़गे ने लिया फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष रहे अरविंदर सिंह लवली के इस्तीफे के बाद अब पार्टी ने बड़ा फैसला लिया है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने देवेंद्र यादव को दिल्ली कांग्रेस का अंतरिम अध्यक्ष नियुक्त किया है। देवेंद्र यादव पंजाब कांग्रेस कमेटी के प्रभारी भी हैं। देवेंद्र यादव कांग्रेस के कद्दावर नेता हैं। वह दो बार दिल्ली की बादली विधानसभा सीट से विधायक भी चुने जा चुके हैं। वर्ष 2008 और 2013 के विधानसभा चुनाव में देवेंद्र यादव कांग्रेस के टिकट पर विधायक चुने गए थे। देवेंद्र यादव कांग्रेस वर्किंग कमेटी के भी परमानेंट सदस्य हैं। 2015 के चुनाव में वह बादली विधानसभा सीट से दूसरे नंबर पर थे जबकि 2020 के विधानसभा चुनाव में तीसरे नंबर पर थे। अरविंदर सिंह लवली ने अपने इस्तीफे में कहा था कि दिल्ली कांग्रेस आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन के पक्ष में नहीं है।

सबको पता है श्रीराम कहां पैदा हुए, लेकिन कांग्रेस को नहीं मालूम, अब जनता बताएगी

मोदीजी ने देश की हालत बदल दी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

रायसेन। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विदिशा लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के समर्थन में जिला रायसेन के बेगमगंज में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सबको पता है कि भगवान श्रीराम कहां पैदा हुए थे, लेकिन कांग्रेस को नहीं मालूम है। अब तो देश की जनता ही बताएगी कि जिनको श्रीराम के जन्म स्थान का नहीं पता वे कैसे इस देश में रहने के लायक हैं। कांग्रेस 70 साल तक इस देश पर राज करती रही, लेकिन श्रीराम मंदिर को लेकर कोई पहल नहीं की। हमेशा से मंदिर निर्माण में अड़ंगा लगाया, अब तो जनता ही इन्हें सबक सिखाएगी। जनसभा को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री और विदिशा लोकसभा सीट से पार्टी प्रत्याशी श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने जितने विकास के काम किए हैं, उतने कांग्रेस ने कभी नहीं किए। आज कांग्रेस के उल्टे फैसलों के कारण उसकी हालत ऐसी हो गई है कि इंदौर के लोकसभा प्रत्याशी भी कांग्रेस का दामन छोड़कर भाजपा में आ गए हैं। कांग्रेस में अब कोई दम नहीं बचा है। कांग्रेस अब किसी काम की नहीं रही है।

मोदीजी जो बोलते हैं वो करके भी दिखाते हैं- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जो बोलते हैं वह करके भी दिखाते हैं। देश में ऐसा पहली बार हुआ है कि देश के प्रधानमंत्री ने जो बोला वह करके भी दिखाया। हम सबने देखा पाकिस्तान ने जब हमारे सैनिकों के उपर रात में हमला किया। उसके बाद डंके की चोट पर पाकिस्तान को घर में घुसकर एक नहीं दो-दो बार मार कर दिखाया। यह काम सिर्फ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ही कर सकते थे। कांग्रेस वर्षों तक श्रीराम मंदिर के निर्माण में अड़ंगे लगाती रही, लेकिन मोदीजी ने वादा किया था और आज अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण चल रहा है। अब भगवान श्रीराम अयोध्या में मुस्कुरा रहे हैं। बनारस में भी बाबा विश्वनाथ और उज्जैन में बाबा महाकाल लोक का भी आनंद आया। अब बारी मथुरा में श्रीकृष्ण की है।

इस बार का वोट मथुरा के लिए पड़ना चाहिए- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमने पहला वोट 2014 में देश की सुरक्षा के लिए दिया था। 2014 से पहले देश में कहीं भी और कभी भी आतंक हमले हो जाते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं होता है। दूसरी बार के वोट से 5 साल से भी कम समय में कश्मीर से धारा 370 हटी। धारा 370 के कारण 40 हजार निरपराध लोग मारे गए और 30 हजार महिलाओं के मंगलसूत्र लूटे गए। यह सारा पाप कांग्रेस के माथे पर है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 01 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

चुनाव से पहले ही क्यों!

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर 'सुप्रीम' सवाल

● **एससी ने टाइमिंग पर उठाए सवाल ईडी से मांगा जवाब**

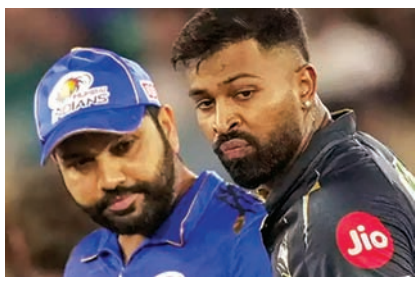

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईडी द्वारा अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को इस गिरफ्तारी के समय पर सवाल उठाया। उन्होंने आम चुनाव से ठीक पहले केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) से जवाब मांगा है। इस बारे में ईडी से शुक्रवार तक जवाब देने के लिए कहा गया है। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ ने सुनवाई के दौरान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से कहा, स्वतंत्रता बहुत महत्वपूर्ण है, आप इससे इनकार नहीं कर सकते। आखिरी सवाल गिरफ्तारी के समय के संबंध में है, जिसके बारे में उन्होंने बताया है। गिरफ्तारी का समय, आम चुनाव से ठीक पहले क्यों। पीठ ने राजू से कई अन्य सवाल भी पूछे और ईडी को सुनवाई की अगली तारीख पर जवाब देने को कहा। मामले की सुनवाई शुक्रवार को होने की संभावना है, बुधवार से दोनों न्यायाधीश अलग-अलग पीठ में बैठेंगे। इस मामले में मंगलवार को लगातार दूसरे दिन सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। अदालत में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की तरफ से वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने पक्ष रखा। बता दें कि केजरीवाल ने एक्साइज ड्यूटी घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ईडी द्वारा उनकी गिरफ्तारी को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है।

टी-20 वर्ल्डकप के लिए भारतीय टीम का ऐलान

शिवम दुबे को टीम में जगह,पंत-सैमसन विकेटकीपर; गिल और रिंकू सिंह रिजर्व प्लेयर

मुंबई (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए भारतीय टीम का ऐलान हो गया है। 2024 का टी-20 वर्ल्ड कप 2 से 29 जून तक अमेरिका और वेस्टइंडीज में खेला जाएगा। टीम इंडिया 5 जून को आयरलैंड के खिलाफ मुकाबले से अपने अभियान की शुरुआत करेगी।

टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए भारतीय टीम -रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पंड्या (उपकप्तान), विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, संजू सैमसन, शिवम दुबे, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल. अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज। रिजर्व प्लेयर- शुभमन गिल, खलील अहमद, रिंकू सिंह, आवेश खान। टीम इंडिया पहला मुकाबला 5 जून को आयरलैंड से खेलेगी। टीम का दूसरा मुकाबला 9 जून को पाकिस्तान, 12 जून को तीसरा मुकाबला अमेरिका और 15 जून को चौथा मुकाबला कनाडा से होगा।

इस बार टी-20 वर्ल्ड कप 2 से 29 जून तक वेस्टइंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा। टूर्नामेंट का ओपनिंग मैच कनाडा और होम टीम अमेरिका के बीच डालास में होगा। फाइनल मैच 29 जून को वेस्टइंडीज के बारबाडोस शहर में होगा। सुपर-8 और नॉकआउट मैच वेस्टइंडीज में होंगे।

एस्ट्राजेनेका की कोरोना वैक्सीन से हार्ट अटैक का बढ़ा खतरा

● **ब्रिटिश कंपनी ने कोर्ट में माना, भारत में इसी फॉर्मूले से बनी कोवीशील्ड के 175 करोड़ डोज लगे**

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन की फार्मा कंपनी एस्ट्राजेनेका ने माना है कि उनकी कोविड-19 वैक्सीन से खतरनाक साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत रेयर (दुर्लभ) मामलों में ही होगा। एस्ट्राजेनेका का जो फॉर्मूला था उसी से भारत में सीरम इंस्टीट्यूट ने कोवीशील्ड नाम से वैक्सीन बनाई है। ब्रिटिश मीडिया टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, एस्ट्राजेनेका पर आरोप है कि उनकी वैक्सीन से कई लोगों की मौत हो गई। वहीं कई अन्य को गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ा। कंपनी के खिलाफ हाईकोर्ट में 51 केस चल रहे हैं। पीड़ितों ने एस्ट्राजेनेका से करीब 1 हजार करोड़ का हर्जाना मांगा है। ब्रिटिश हाईकोर्ट में जमा किए गए दस्तावेजों में कंपनी ने माना है कि उनकी कोरोना वैक्सीन से कुछ मामलों में थ्रॉम्बोसिस थ्रॉम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम यानी ञ्झञ्झस् हो सकता है। इस बीमारी से शरीर में खून के थक्के जम जाते हैं और प्लेटलेट्स की संख्या गिर जाती है। अप्रैल 2021 में जेमी स्कॉट नाम के शख्स ने यह वैक्सीन लगवाई थी। इसके बाद उनकी हालत खराब हो गई। शरीर में खून के थक्के बनने का सीधा असर उनके दिमाग पर पड़ा। इसके अलावा स्कॉट के ब्रेन में इंटर्नल ब्लीडिंग भी हुई।

● **अमित शाह फेक वीडियो केस**

बड़ा ऐक्शन, 2 अरेस्ट, एएपी-कांग्रेस से लिंक

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के फर्जी वीडियो मामले में पुलिस हरकत में आ गई है। खबर है कि दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि दोनों आम आदमी पार्टी यानी एएपी और कांग्रेस से जुड़े हुए हैं। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को भी इससे जुड़े मामले में पूछताछ के लिए तलब किया है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, आप और कांग्रेस से जुड़े दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अहमदाबाद साइबर क्राइम टीम ने यह कार्रवाई की है। इससे पहले सोमवार को असम पुलिस ने भी कहा था कि एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। उसके पास से एक लैपटॉप और दो मोबाइल फोन भी जब्त किए गए थे। असम के मुख्यमंत्री ने बताया था कि गिरफ्तार किए गए व्यक्ति का नाम रीतोम सिंह है।

वोट का जिहाद करो... मुस्लिमों से अपील

सलमान खुर्शीद की भतीजी ने मंच से कही बात

फर्रुखाबाद में मुस्लिमों से मारिया ने की अपील

फर्रुखाबाद (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के बीच उत्तर प्रदेश की राजनीति में वोट जिहाद की एंट्री हो गई है। फर्रुखाबाद में इंडी गठबंधन की तरफ से चुनावी सभा में सीनियर कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी ने मंच से अपील करते हुए एकजुट होकर और खामोशी के साथ वोट जिहाद करने की बात कही। इसके साथ ही बीजेपी का साथ देने वाले मुस्लिमों का हुक्का-पानी बंद करने की भी अपील की। फर्रुखाबाद के मोहल्ला चिलांका में इमाम चौक के पास हुई हुई जनसभा में बोलते हुए सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया आलम खां ने कहा,बहुत अक्लमंदी के साथ, बिना जल्दबाजी किए एकदम खामोशी से एक साथ होकर वोट का जिहाद करो। क्योंकि हम केवल वोटों का जिहाद ही कर सकते हैं। और इस संघी सरकार को भगाने का काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा, मुझे बहुत शर्म आती है कि कुछ मुसलमानों ने बैठकर बीजेपी कैंडीडेट) की मीटिंग कराई।

समुद्र से युद्ध जीतने के लिए तैयार रहना होगा...

नई दिल्ली (एजेंसी)। एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने नौसेना के 26वें प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मंगलवार को कहा कि भारतीय नौसेना को समुद्र में संभावित शत्रुओं से निपटने के लिए हर समय अभियान की दृष्टि से तैयार रहना होगा। संचार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध विशेषज्ञ एडमिरल त्रिपाठी ने आर हरि कुमार के रिटायर होने के बाद यह जिम्मेदारी संभाली है। एडमिरल त्रिपाठी ने ऐसे समय में नौसेना प्रमुख की जिम्मेदारी संभाली है जब लाल सागर और अदन की खाड़ी समेत अनेक रणनीतिक जलमार्गों पर सुरक्षा चुनौतियां पैदा हुई हैं जिनमें क्षेत्र में हूती उग्रवादियों द्वारा विभिन्न कारोबारी जहाजों को निशाना बनाया जाना शामिल है।

मैं इस साल भी नहीं कर पाया... आई एम सॉरी पापा

● **और कोटा में डॉक्टर बनने का सपना लिए फंदे से झूल गया भरत, 4 महीने में ये 8वीं जान गई**

कोटा (एजेंसी)। राजस्थान के कोटा के धौलपुर निवासी भरत कुमार राजपूत ने अपने पिता को सादे कागज पर लिखा, पापा, मुझे माफ करना, इस बार भी मेरा नीट में चयन नहीं हो पाएगा। इस संदेश के बाद उसने दुखद रूप से अपनी जान ले ली। यह दुखद घटना जवाहर नगर थाने के तलवंडी इलाके में हुई। भरत यहां अपने भांजे के साथ एक पीजी में रह रहा था। मंगलवार को भरत की मौत ने एक बार फिर उन सरकारी और गैर सरकारी दावों की पोल खोल दी है, जिनमें कोटा कोचिंग छात्रों के मानसिक तनाव को दूर करने के लिए प्रयास किए गए हैं। पिछले चार महीने में भरत के माता-पिता की तरह 8 परिवार अपने बच्चों की जान गंवा चुके हैं। नीट की परीक्षा के अपने रिजल्ट को लेकर परेशान भरत इससे पहले दो बार नीट परीक्षा दे चुका था। परीक्षा में अपने तीसरे प्रयास की तैयारी के लिए वह कोटा में रह रहा था और कोचिंग ले रहा था।

पन्नू, सीएए, केजरीवाल...

अमेरिका के निशाने पर डोभाल समेत टीम मोदी

चुनाव के बीच जो बाइडन की मंशा पर उठ रहे सवाल

भारत और अमेरिका के बीच बढ़ रहा राजनयिक तनाव

वॉशिंगटन (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच राजनयिक तनाव लोकसभा चुनावों के बीच बढ़ता ही जा रहा है। सीएए, अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी और अब खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू मामले में अमेरिका ने नापाक चाल चली है। सीएए और केजरीवाल मामले में अमेरिका ने खुलकर बयान दिया है, वहीं पन्नू की हत्या की कथित साजिश पर अमेरिकी अधिकारी ने तत्कालीन भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ के चीफ सामंत गोयल का नाम लिया है, वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल पर निशाना साधा है। अमेरिकी अखबार वॉशिंगटन पोस्ट ने दावा किया है कि अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि पन्नू का मारने का आदेश पूर्ववर्ती रॉ चीफ ने दिया था और उसे वरिष्ठ खुफिया अधिकारियों की मंजूरी थी जिनके पीएम नरेंद्र मोदी के इनर सर्कल से संबंध हैं। अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से आई वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट को भारत ने खारिज कर दिया है और गैर जिम्मेदाराना करार दिया है। अमेरिकी अधिकारियों ने कथित रॉ एजेंट विक्रम यादव का नाम भी लिया है। विक्रम पर आरोप है कि उसने पन्नू के बारे में सारी जानकारी किलर को दी जिसमें खालिस्तानी आतंकी का न्यूयॉर्क स्थित पता भी शामिल है। वॉशिंगटन पोस्ट को पन्नू मामले की सूचना लीक करने के बाद अब अमेरिका दावा कर रहा है कि भारत पन्नू की अमेरिका में हत्या की साजिश संबंधी आरोपों को गंभीरता से ले रहा है। वाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरीन ज्यां-पियरे ने सोमवार को यह बयान दिया। वॉशिंगटन पोस्ट ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से दावा किया है कि अमेरिका में विक्रम यादव नामक रॉ अधिकारी पन्नू की हत्या की साजिश में शामिल थे।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में लैंडस्लाइड-बाढ़ से 5 की मौत

● **रविवार रात से जारी है बारिश ,ऊंचाई वाले इलाकों में भारी बर्फबारी**

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में लैंडस्लाइड और बाढ़ से 5 लोगों की मौत हो गई। जम्मू कश्मीर में रविवार से भारी बारिश हो रही है। राज्य के पहाड़ों पर बर्फबारी भी जारी है। कई घरों को नुकसान पहुंचा है और सैकड़ों रहवासी प्रभावित हुए हैं। जम्मू क्षेत्र के डोडा, रियासी, किश्तवाड़, रामबन और कश्मीर के किश्तवाड़ सहित कई पहाड़ी जिलों में भारी बारिश और भूस्खलन हुआ है।

कल, रामबन जिले में कई स्थानों पर भूस्खलन के बाद श्रीनगर-जम्मू बंद कर दिया गया था। बाढ़ ने कुपवाड़ा जिले में शूमरियाल ब्रिज, खुमरियाल ब्रिज, शतमुकम ब्रिज, सोहिपोरा-हैहामा ब्रिज, फारक्यान ब्रिज, कुपवाड़ा में दो ग्रामीण विकास विभाग भवन और सहायक निदेशक हस्तशिल्प कार्यालय भवन को नुकसान पहुंचाया है। शुमर्याल- गुंडाझांगर सड़क टूट गई है। डोबन कछामा बांध में दरार आ गई है। कुपवाड़ा में अब स्थिति में सुधार होना शुरू हो गया है। जल स्तर घट रहा है और लोग अपने टूटे घरों में लौट रहे हैं। कल अचानक आई बाढ़ के कारण सड़क का एक हिस्सा बह गया और कई घरों में घुटनों तक पानी भर गया है।

संकट मोचन संगीत समारोह

मेरा कुछ नहीं, सब संकट मोचन का है : कंकना बनर्जी

राजेन्द्र शर्मा
(लेखक कलाविज्ञ और उप्र सरकार में अधिकारी हैं)

देश की प्रख्यात शास्त्रीय गायिका और उस्ताद अमीर खान साहब की शिष्या विदुषी कंकना बनर्जी जीवन के अस्सीवें वर्ष में है लेकिन इन दिनों संकट मोचन संगीत समारोह के अतिथि गृह में ठहरी कंकना बनर्जी बच्चे की मानिंद अपनी मुस्कान बिखेरते हुए अपने किये का कोई दम्भ न भर सहज रुप से कहती है - मेरा कुछ नहीं, सब संकट मोचन का है ।

विदुषी कंकना बनर्जी संकट मोचन संगीत समारोह में 47 वर्षो से अनवरत रुप से अपनी हाजिरी लगा रही है और संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगाने वाली पहली महिला कलाकार होने का गौरव भी उन्हें ही प्राप्त है । वर्ष 1977 तक संकट मोचन समारोह में महिला कलाकारों को शामिल नहीं किया जाता था, केवल पुरुष कलाकार ही अपनी हाजिरी लगाते थे ।

वाराणसी के शास्त्रीय कलाकार जतिन भटटाचार्य 1976 में मुंबई गये तो उन्होंने बिरला हाल मुम्बई में विदुषी कंकना बनर्जी का गायन सुना। जतिन भटटाचार्य उनकी आवाज से प्रभावित हुए। बातचीत में उन्होंने कंकना बनर्जी को संकट मोचन संगीत समारोह के बारे में बताया। संकट मोचन संगीत समारोह के बारे में सुनकर कंकना प्रभावित हुई यधपि वह उसमें प्रस्तुति नहीं दे सकती थी क्योंकि तब तक महिला कलाकारों की प्रस्तुति पर मनाही थी। इसके बावजूद कंकना की इच्छा हुई कि संकट मोचन संगीत समारोह में प्रस्तुति न सही, बतौर श्रोता तो जाया ही जा सकता है ।

इधर जतिन भट्टाचार्य ने वाराणसी आकर महंत वीरभद्र मिश्र को विदुषी कंकना बनर्जी के बारे में विस्तार से बताया। हमेशा लीक से हटकर सोचने और सोचे हुए को साकार करने की अद्भुत इच्छाशक्ति के धनी महंत वीरभद्र मिश्र ने कंकना बनर्जी को पत्र भेजकर संकट मोचन संगीत समारोह में आमत्रित किया। उस्ताद अमीर खान की दुर्घटना में मृत्यु के उपरांत कंकना बनर्जी ने पंडित जसराज के बडे भाई और फिल्म अभिनेत्री सुलक्षणा पंडित, विजयेता पंडित के पिता पंडित प्रकाश नारायण को अपना गुरु बना लिया था। संयोग ऐसा बना कि 1978 में पंडित प्रकाश नारायण को संकट मोचन संगीत समारोह में बतौर कलाकार हाजिरी लगाने हेतु आमत्रित किया गया। इस संयोग के चलते गुरु और शिष्या दोंनों मुंबई से वाराणसी पहुचें और पंडित प्रकाश नारायण ने अपनी शिष्या कंकना बनर्जी का साक्षात परियय महंत वीरभद्र मिश्र से कराया। मंहत वीरभद्र मिश्र जतिन भट्टाचार्य से पहले ही कंकना बनर्जी के बारे में सुन चुके थे ।

1978 में आयोजित तीन दिवसीय संकट मोचन संगीत समारोह की अन्तिम निशा में पंडित प्रकाश नारायण की प्रस्तुति थी। विदुषी कंकना बनर्जी 47 साल पहले के उस वाक्ये को याद कर उत्साह से बताती है कि संकट मोचन संगीत समारोह में महिला कलाकारों की मनाही है, यह मैं जानती थी, मैं तो उस दिन बतौर श्रोता नाइलोन की साडी पहनकर गयी और श्रोताओं में जाकर बैठ गयी। अर्ध रात्रि जब पंडित प्रकाश नारायण की प्रस्तुति का समय आया तो संचालक ने गुरु जी प्रकाश नारायण जी को आमत्रित करते हुए कहा कि पंडित प्रकाश नारायण के साथ तानपुरे पर उन्ही की शिष्या कंकना बनर्जी संगत करेंगी। कंकना बनर्जी हैरान-परेशान। दरअसल महंत वीरभद्र मिश्र के आदेशानुसार ही संचालक द्वारा ऐसा किया था। अपने नाम की घोषणा सुन कंकना बनर्जी श्रोताओं के बीच में से उठकर मंच पर पहुंची और तानपुरा संभाला।

पंडित प्रकाश नारायण की प्रस्तुति आरम्भ हुई। तानपुरे पर संगत कर उनकी शिष्या कंकना बनर्जी ने भी बीच में सुर लगा दिया। महिला स्वर का आलाप लगते ही श्रोताओं में कानाफूसी होने लगी। श्रोताओं का कहना था कि महिला ने गा दिया... महिला ने गा दिया। कतिपय परम्परा टूट जाने के नाजुक पलों में महंत प्रो. वीरभद्र मिश्र ने पहले माहौल को समझा और फिर हाथ उठाकर सभी को शांत रहने का संकेत दिया।

श्रोताओं की कानाफूसी के बीच जैसे ही पंडित प्रकाश नारायण की प्रस्तुति पूर्ण हुई तो गजब की इच्छाशक्ति और दूरदर्शी महंत वीरभद्र मिश्र ने स्वयं ही माईक संभालते हुए बिना किसी भूमिका के कहा कि संगीत किसी जेंडर और मजहब की सीमा में कैद नहीं होता है। महंत वीरभद्र मिश्र ने बिना किसी की परवाह किये उसी समय घोषणा कर दी कि अगले वर्ष के आयोजन में विदुषी कंकना बनर्जी अपनी स्वतंत्र प्रस्तुति देगी।

उसके बाद तो संकट मोचन संगीत समारोह में महिला कलाकारों के लिए द्वार खुले गये किन्तु 1978 में जिस इच्छाशक्ति के दम पर महंत वीरभद्र मिश्र ने उस समय क्रांतिकारी निर्णय लिया था, कंकना बनर्जी भी उसी संकल्पित इच्छा शक्ति के दम पर विगत 47 वर्ष से अनवरत रुप से संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी भर ही नहीं लगाती अपितु संपूर्ण समारोह में उपस्थित रहकर दूसरे कलाकारों को सुनती और मंदिर परिसर में ही बने अतिथि गृह में रहती है । इस वर्ष के आयोजन के अन्तिम दिन पंडित हरीश तिवारी (दिल्ली) गायिका कविता कृष्णामूर्ति (बेंगलूर) और कंकना बनर्जी का गायन तय है। विदुषी कंकना बनर्जी को सुनने वाले श्रोता दो मई की प्रतीक्षा कर रहे है परन्तु विदुषी कंकना बनर्जी किसी प्रतीक्षा में नहीं है । वह बच्चों की मानिंद कहती है कि मेरा क्या, कुछ भी नही, सब संकट मोचन का है । संकट मोचन 47 साल से हर बार बुलाते है, मैं आती हूँ और जब तक मेरा जीवन है, मेरा विश्वास है कि संकट मोचन मुझे बुलाते रहेगें, मैं आती रहूंगी। हां, संकट मोचन के बाद वह तत्कालीन महंत वीरभद्र मिश्र को श्रद्धा सम्मान से याद कर कहती है कि ऐसे बिरले व्यक्तित्व सदी में एक दो ही जन्म लेती है।

शहर के गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया में लगी आग

•आग के दौरान ब्लास्ट से दो मजदूर घायल; हॉस्पिटल में भर्ती

भोपाल। भोपाल के गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया स्थित एक पेंट फैक्टरी में सोमवार दोपहर को आग लग गई। इस दौरान सिलेंडर या किसी अन्य उपकरण में ब्लास्ट हो गया। जिससे दो मजदूर घायल हो गए। इन्हें हमीदिया हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। आगजनी की घटना दोपहर 2.30 बजे की है। गोविंदपुरा फायर स्टेशन से फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। गोविंदपुरा फायर स्टेशन के फायर फाइटर विजय त्रिपाठी ने बताया, शुभ हॉस्पिटल के सामने माइकल इंडस्ट्री है। जहां पेंट और पाउडर कोडिंग होती है। इसी में आग लगी। जब मौके पर पहुंचे, जब तक आग काबू में आ गई थी। फायर फाइटर त्रिपाठी ने बताया, फैक्टरी में आग के दौरान हल्का ब्लास्ट भी हुआ था। जिससे दो मजदूर घायल हो गए। वे इसी फैक्टरी में काम करना बताए जा रहे हैं। फैक्टरी के अन्य कर्मचारी उन्हें हमीदिया हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। जहां इलाज किया जा रहा है। ब्लास्ट किस वस्तु में हुआ, यह पता नहीं चल सका है। मजदूरों की हालत ठीक बताई जा रही है।

धीरेंद्र शास्त्री बोले-भारत हिंदू राष्ट्र हो, विरोधियों की ठठरी बंधे

•महाकाल मंदिर में रुद्राभिषेक कर कहा- यहां भी धर्म विरोधी टांग अड़ा रहे

भोपाल। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने मंगलवार को महाकाल के दर्शन किए। मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा, 'महाकाल से मध्यप्रदेश और देश के कल्याण की मंगलकामना की। भारत हिंदू राष्ट्र हो, इसके लिए हमने रुद्राभिषेक किया, धर्म विरोधियों की ठठरी बंधे। उन्होंने कहा, महाकाल की प्राचीन परंपरा बरकरार रहनी चाहिए, यहां के पुजारियों की परंपरा बरकरार रहनी चाहिए, प्राचीन परंपरा अक्षुण्य रहनी चाहिए, इससे संस्कृति जीवंत रहेगी। कुछ धर्म विरोधी यहां पर भी टांग अड़ाना चाहते हैं।' मंगलवार सुबह 4 बजे भगवान महाकाल का जलाभिषेक और दूध, दही, घी, शक्कर, फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया। प्रथम घंटाल बजाकर हरि ओम का जल अर्पित किया गया। कपूर आरती के बाद ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढांककर भस्मी रमाई गई। भगवान महाकाल का भांग, सूखे मेवों, चंदन, आभूषण और फूलों से राजा स्वरूप में श्रृंगार किया गया। भस्म अर्पित करने के पश्चात शेषनाग का रजत मुकुट, रजत की मुंडमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ सुगंधित पुष्प से बनी माला अर्पित की गई। बागेश्वरधाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इंदौर में कथा कर रहे हैं। कथा आईटीआई रोड स्थित मां कनकेश्वरी देवी गरबा परिसर में चल रही है। श्रीमद् भागवत कथा प्रतिदिन 4 मई तक शाम 4 बजे से 7 बजे तक हो रही है।

अप्रैल में पहली बार एमपी में 20 दिन बारिश

आखिरी 2 दिन रही तेज गर्मी, ऐसा मौसम एक सप्ताह तक रहेगा

भोपाल। अप्रैल के महीने में मध्यप्रदेश में तेज गर्मी पड़ने का ट्रेंड रहा है। ग्वालियर-चंबल समेत नौगांव, खजुराहो, रीवा, नरसिंहपुर, खंडवा, खरगोन में तो टेम्प्रेचर 44 डिग्री के पार पहुंच जाता है, लेकिन इस बार न सिर्फ बारिश हुई, बल्कि अप्रैल महीने में बारिश के रिकॉर्ड भी टूट गए। पहली बार 20 दिनों तक बारिश हुई। भोपाल में तो ओवरऑल बारिश का रिकॉर्ड भी टूट गया। बारिश से प्रदेश का 80 प्रतिशत हिस्सा तक भीग गया। आखिरी 2 दिन आंधी-बारिश का कोई सिस्टम नहीं है, इसलिए तीखी गर्मी पड़ रही है। सोमवार को भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, रीवा, सतना समेत 22 शहरों में पारा 40 डिग्री के पार रहा। इस दिन हर शहर में टेम्प्रेचर में 1 डिग्री से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई। बालाघाट के मलाजखंड में पारा 6.6 डिग्री तक चढ़ गया। पूर्वी हिस्से के ज्यादातर शहरों में पारे में बढ़ोतरी हुई। जबलपुर, रीवा, सतना, दमोह, खंडवा और खजुराहो में पारा 42 डिग्री या इसके पार पहुंच गया। सबसे गर्म रीवा रहा। यहां तापमान 42.4 डिग्री दर्ज किया गया। मंगलवार को भी तेज गर्मी पड़ेगी। आईएमडी भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, अप्रैल की शुरुआत में ही वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन की वजह से ओले, बारिश-आंधी का स्ट्रॉन्ग सिस्टम बना। आखिरी सप्ताह में भी सिस्टम की एक्टिविटी रही। इस वजह से पूरे महीने करीब 20 दिन तक बारिश हुई। इस दौरान कई शहरों में ओले गिरे और तेज आंधी भी चली। मौसम में बदलाव होने से टेम्प्रेचर में ज्यादा बढ़ोतरी नहीं हुई। पारा सामान्य से 1-2 डिग्री कम ही रहा। वेस्टर्न डिस्टरबेंस समेत अन्य सिस्टम एक्टिव होने से अप्रैल के पूरे महीने ही बारिश का दौर चला है। अप्रैल में ओवर ऑल बारिश का रिकॉर्ड भी टूट गया। भोपाल में पौने 2 इंच से ज्यादा बारिश हुई। वहीं, अप्रैल में लगातार 11 दिन तक बारिश होने का रिकॉर्ड भी बना है। 7 अप्रैल से 17 अप्रैल तक प्रदेश में लगातार बारिश हुई है। इसके बाद लगातार 9 दिन तक फिर से बारिश का दौर चला। सोमवार को भी बैतूल, छिंदवाड़ा और सिवनी में मौसम बदला रहा। सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ने बताया, अब सिस्टम कमजोर हो गया है। इस वजह से अगले कुछ दिन तक बारिश होने के आसार नहीं हैं। मई के पहले सप्ताह में एक सिस्टम एक्टिव हो सकता है। इसका प्रदेश में कितना असर रहेगा, यह एक-दो दिन में पता चलेगा। फिलहाल गर्मी का असर तेज ही रहने का अनुमान है। अप्रैल महीने में बारिश के आंकड़ों की बात करें तो छिंदवाड़ा जिला ऐसा रहा, जहां सबसे ज्यादा बारिश हुई। अप्रैल की सामान्य बारिश 4.4 मिमी है, लेकिन पूरे महीने यहां 65.3 मिमी यानी, 2.57 इंच बारिश हो गई। भोपाल में 52.4 मिमी यानी 2 इंच से ज्यादा पानी गिरा। सीहोर, सिवनी और विदिशा में भी डेढ़ से पौने दो इंच बारिश हुई, जो सामान्य बारिश के मुकाबले कई गुना अधिक है। मुरैना और भिंड में बारिश दर्ज नहीं की गई। ग्वालियर में 1 मिमी पानी भी नहीं गिरा, जबकि सामान्य बारिश 5.2 मिमी है। धार में आधा मिमी से भी कम बारिश दर्ज की गई। धार की सामान्य बारिश 1 मिमी है।

नदियों का प्रदूषण

11 माह बाद आई राज्यपाल के निर्देश पर अमल की सुध

•अब इरीगेशन अफसरों को जारी हुए निर्देश, लापरवाही पर होगा ऐक्शन

भोपाल। नदियों का प्रदूषण रोकने को लेकर राज्यपाल द्वारा करीब 11 माह पहले दिए गए निर्देश पर अमल के लिए अब तक कार्ययोजना नहीं बन सकी है। इसके लिए चार बार रिमाइंडर भी दिए जा चुके हैं। अब एक बार फिर इसके लिए इरीगेशन डिपार्टमेंट के अफसरों ने 9 मुख्य अभियंताओं को इस पर एक्शन के लिए निर्देशित किया है। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने पिछले साल 12 जून को एप्को की वार्षिक साधारण सभा के दौरान नदियों के प्रदूषण पर रोकथाम के लिए काम करने की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि वेटलैंड और तालाबों के संरक्षण के लिए विशेष प्रयास किए जाने की जरूरत है ताकि नदियों को शुद्ध करने से पेयजल और वातवरण की शुद्धता बनी रहे। इसके बाद केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जल गुणवत्ता के आधार पर एमपी की ऐसी नदियों को चिन्हित किया गया जो प्रदूषित हैं। उनके प्रदूषण वाले पाइंट भी तय किए गए और संबंधित विभागों को प्रदूषण रोकने के लिए काम करने को कहा गया लेकिन काम नहीं हुआ है।

पांच विभागों की जिम्मेदारी, यहां रोकना होगा प्रदूषण

नदियों के प्रदूषण रोकने के लिए जिन स्थानों पर काम करने के लिए विभागों की जिम्मेदारी तय की गई है। उसमें इंदौर में खान नदी पर निमोली टैंक से त्रिवेणी संगम तक, उज्जैन में क्षिप्रा नदी पर त्रिवेणी से सिद्धवट तक, नागदा में चंबल नदी पर नागदा से राजगढ़ तक प्रदूषण रोकने के लिए काम करना है। इसके अलावा बेतवा नदी को मंडीदीप से विदिशा तक तथा सोन नदी को भतुरा घाट पर सफाई के जरिए प्रदूषण मुक्त किया जाना है। इस काम के लिए जो विभाग जवाबदेह बनाए गए हैं उसमें नगरीय विकास और आवास, पंचायत और ग्रामीण विकास, जल संसाधन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, औद्योगिक नीति और निवेश प्रोत्साहन विभाग के नाम शामिल हैं। राज्यपाल द्वारा दिए गए निर्देश 12 जून 2023 के हैं और अब दो माह बाद फिर एप्को की वार्षिक साधारण सभा में बैठक होने वाली है। इसलिए अब 11 माह बीतने पर अधिकारियों को राज्यपाल के निर्देश पर अमल नहीं होने की चिंता सता रही है। दूसरी ओर लापरवाही का आलम यह भी है कि 10 जुलाई 2023, 26 जुलाई 2023, 18 जनवरी 2024, 22 अप्रेल 2024 को पत्र लिखे जा चुके हैं पर काम नहीं हुआ है। जल संसाधन विभाग ने अब इस मामले में सभी 9 मुख्य अभियंताओं को इसके लिए पत्र लिखकर नदियों के शुद्धिकरण के लिए काम करने को कहा है।

बिना इंजन दौड़ी मालगाड़ी 5 डिब्बे पटरी से उतरे

• खंडवा में ओएचई पोल टेढ़ा हुआ, इटारसी-मुंबई रूट ढाई घंटे प्रभावित रहा

भोपाल। खंडवा रेलवे स्टेशन पर मंगलवार सुबह 7.30 बजे मालगाड़ी बिना इंजन के ही 200 मीटर तक दौड़ गई। मालगाड़ी के 5 डिब्बे पटरी से उतर गए। ओवर हैड इक्विपमेंट (ओएचई) लाइन का पोल टेढ़ा हो गया। इस वजह से इटारसी-मुंबई अप-डाउन ट्रैक पर ढाई घंटे से ज्यादा यातायात बाधित रहा। खंडवा रेलवे स्टेशन जंक्शन है। दिल्ली - मुंबई वाया भोपाल, जबलपुर से कनेक्ट है। खंडवा आने वाली और यहां से होकर गुजरने वाली ट्रेनों को आसपास के दूसरे रेलवे स्टेशनों पर रोक कर रखना पड़ा। गर्मी में यात्रियों को परेशान होना पड़ा। सीपीआरओ मुंबई डॉ. स्वप्निल मीणा ने बताया कि चेकिंग के बाद अप एंड डाउन लाइन पर ट्रेनों को रवाना किया गया। गिट्टी से भरी 12 डिब्बों की मालगाड़ी खंडवा रेलवे स्टेशन के आउटर पर सोमवार रात से खड़ी थी। इंजन नहीं जुड़ा था। बताया जा रहा है कि ट्रेन के पहियों में पॉइंट (रोककर रखने के लिए टेक) नहीं लगाए गए थे। ऐसे में मालगाड़ी आज सुबह आगे बढ़ गई। मालगाड़ी लूप लाइन पर थी। इसके डिब्बे डिरेल होकर ओएचई पोल से टकरा गए। पोल टेढ़ा होने की वजह से बिजली सप्लाई बंद हो गई। रेलकर्मियों ने ढाई घंटे की मेहनत के बाद मेन लाइन को शुरू कराया। लूप लाइन पर काम जारी है। इसे ठीक होने में और समय लग सकता है।

पीएचक्यू के टेनिस कोर्ट में सिपाही की हो गई मौत

आईपीएस अफसर लेकर पहुंचे अस्पताल, कार्डियक अरेस्ट की आशंका

भोपाल। भोपाल स्थित पुलिस मुख्यालय (पीएचक्यू) में मंगलवार सुबह टेनिस कोर्ट के केयरटेकर (आरक्षक) की ड्यूटी के दौरान मौत हो गई। घटना के वक्त वहां कई आईपीएस अफसर मौजूद थे। अफसर केयरटेकर को अस्पताल भी लेकर गए। डॉक्टर्स ने कार्डियक अरेस्ट की आशंका जाहिर की है। पुलिस ने मौत के मामले में प्रकरण दर्ज नहीं किया है। गाजीपुर उत्तर प्रदेश के रहने वाले उमाकांत राय (50) भोपाल में 23वीं बटालियन में आरक्षक थे। उनकी ड्यूटी टेनिस कोर्ट में रहती थी। हर दिन की तरह मंगलवार सुबह वह ड्यूटी पर पहुंचे। घटना सुबह करीब 7 से 7:30 के बीच की है, पुलिस के कुछ आला अफसर टेनिस खेल रहे थे। थोड़ी देर बाद वह कोर्ट के पास ही बने रेस्ट रूम में चले गए। कुर्सी पर बैठने के बाद उन्होंने आंखें बंद कर लीं। इसी दौरान उन्हें सीने में दर्द हुआ। उन्हें तुरंत जवाहर चौक स्थित अनंत हॉर्ट अस्पताल ले जाया

गया। चेकअप के बाद डॉक्टर्स ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताया जा रहा है कि उस समय टेनिस कोर्ट में आईपीएस राजेश चंदेल सहित अन्य अधिकारी टेनिस खेल रहे थे। 23वीं बटालियन से कमांडेंट अजय प्रियानंद ने बताया कि उमाकांत राय 23वीं बटालियन में आरक्षक के रूप में पदस्थ थे। वह गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे। उनकी एक बेटी और एक बेटा है। बेटी दिल्ली में पढ़ाई करती हैं। बेटा भोपाल में इंजीनियरिंग कर रहा है। परिवार के लोग शव लेकर गाजीपुर के लिए रवाना हो गए हैं। कमांडेंट अजय प्रियानंद ने पोस्टमॉर्टम नहीं कराए जाने पर कहा, अगर किसी संदिग्ध स्थिति में मौत होती तो इसमें पीएम कराया जाता है। आरक्षक के परिवार वालों की भी इसको लेकर मर्जी नहीं थी। घटना के बाद आरक्षक परिजन अस्पताल पहुंच गए थे। उन्हें शव दे दिया गया। आरक्षक उमाकांत राय के बेटे प्रवीण राय ने कहा- पिताजी को लंबे समय से चैस्ट पेन की दिक्कत थी।

खजुराहो,इंदौर के चुनावी घटनाक्रम पर झारखंड के सीएम का हमला

चंपई ने लिखा-ये सत्ता में लौटे तो क्या संवैधानिक अधिकार सुरक्षित रहेंगे

भोपाल। मध्यप्रदेश की इंदौर लोकसभा सीट से कांग्रेस के प्रत्याशी अक्षय बम ने नामांकन वापस ले लिया। इससे पहले खजुराहो में I.N.D.I.A गठबंधन की ओर से समाजवादी पार्टी की लोकसभा प्रत्याशी मीरा यादव का नामांकन निरस्त हो गया। इन दोनों मामलों को लेकर कांग्रेस सहित तमाम विपक्षी दल बीजेपी पर हमलावर हैं। एमपी की दो सीटों पर बीजेपी को ओपन ग्राउंड मिलने के बाद झारखंड के सीएम चंपई सोरेन ने भाजपा पर हमला बोला है। झारखंड के सीएम चंपई सोरेन ने 29 अप्रैल को X पर लिखा- पहले अरुणाचल में 10 विधायक निर्विरोध! फिर खजुराहो में नामांकन रद्द! उसके बाद सूरत में निर्विरोध। अब इंदौर में निर्विरोध। सूरत में बीएसपी उम्मीदवार को क्राइम ब्रांच ने मोबाइल लोकेशन से तलाश कर जबरन होटल पहुंचाया था। इंदौर के कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय कांति बम के 17 साल पुराने केस में 3 दिन पहले धारा 307 जोड़ी गई। मतलब साम, दाम, दंड, भेद किसी भी हद तक जाकर जनता के अधिकारों का दमन करके सत्ता के शीर्ष तक पहुंचना ही इनका एकमात्र लक्ष्य है। क्या आपको अब भी लगता है कि अगर ये लोग सत्ता में लौटे तो देश का लोकतंत्र और आपके संवैधानिक अधिकार सुरक्षित रहेंगे। इंदौर लोकसभा सीट से बतौर कांग्रेस प्रत्याशी नामांकन दाखिल करने वाले अक्षय कांति बम ने सोमवार को पर्चा वापस ले लिया। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और भाजपा विधायक रमेश मेंदोला के साथ अक्षय कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। नामांकन वापस लेने के बाद उन्होंने भाजपा भी जॉइन कर ली। बम की नाम वापसी होते ही भाजपा ने ऑपरेशन सूरत-2 पर काम शुरू कर दिया। प्लान था कि गुजरात की सूरत लोकसभा सीट की तरह बचे हुए उम्मीदवारों के नामांकन वापस कराकर इंदौर में निर्विरोध जीत हासिल की जाए। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के नेतृत्व में दोपहर 3 बजे तक माथापच्ची चलती रही लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। 23 में से 9 ही उम्मीदवारों ने नाम वापस लिए। अब इंदौर लोकसभा सीट पर भाजपा के शंकर लालवानी समेत 14 उम्मीदवार मैदान में हैं। खजुराहो लोकसभा सीट से समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी मीरा दीपनारायण यादव का नामांकन फॉर्म रिजेक्ट हो गया था। फॉर्म पर निश्चित जगह हस्ताक्षर नहीं करने और पुरानी नामावली लगाने के चलते पन्ना जिला निर्वाचन अधिकारी सुरेश कुमार मिश्रा ने यह फैसला किया।

राजधानी में शराब परोसने पर रेस्टोरेंट का लाइसेंस निरस्त

लोकसभा चुनाव में पहली ऐसी कार्रवाई; 10 रेस्टोरेंट-होटलों की भी जांच

भोपाल। अवैध तरीके से शराब पिलाने पर भोपाल के एमपी नगर स्थित एटमॉस्फियर रेस्टोरेंट का कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने लाइसेंस निरस्त करने के आदेश दिए हैं। लोकसभा चुनाव में भोपाल में ऐसी पहली कार्रवाई है। इसके साथ 10 रेस्टोरेंट और होटलों की जांच भी की जा रही है। यहां से भी अवैध शराब जब्त की गई थी। इन पर भी कार्रवाई हो सकती है। रेस्टोरेंट पर 20 अप्रैल को आबकारी विभाग ने कार्रवाई की थी। इस दौरान ग्राहकों को बिना अनुमति से शराब पिलाई जा रही थी। विभाग से अस्थायी लाइसेंस भी नहीं लिया गया था। इसके चलते प्रकरण दर्ज कर कलेक्टर के समक्ष पेश किया गया। इस मामले में संचालक का तर्क था कि मेरी और कर्मचारियों की जानकारी के बिना कुछ ग्राहकों द्वारा वीकेंड में शराब लाई गई थी। जिसे ही आबकारी विभाग ने जब्त किया। दूसरी ओर, विभाग के अफसरों का कहना था कि रेस्टोरेंट से पहले भी शराब जब्त की जा चुकी है और जुर्माना भी लगा था। इस बार भी बिना अनुमति के शराब पिलाई जा रही थी। कलेक्टर ने रेस्टोरेंट को श्रम विभाग द्वारा जारी गुमाश्ता, खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा जारी फूड लाइसेंस और निगम द्वारा जारी व्यवसायिक लाइसेंस को तत्काल प्रभाव से निरस्त करने का आदेश दिया है।

संपादकीय

इंदौर : कांग्रेस का 'फुस्सी' बम

चुनावी आतिशबाजी के इस दौर में इंदौर लोकसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय कांति बम ने नामांकन वापसी के आखिरी दिन अपना नाम वापस लेकर भाजपा के लिए वॉक ओवर जैसी स्थिति बना दी है। अक्षय ने न सिर्फ नामांकन वापस लिया बल्कि कुछ देर बाद ही वो बीजेपी में शामिल हो गए। इसको लेकर जहां कांग्रेसियों में गुस्सा है, वहीं बीजेपी लड़ाई से पहले युद्ध जीत लेने की खुशी में सराबोर है। लेकिन भाजपा जिस तरह बिना लड़े किले सर करती जा रही है, उससे पार्टी की नैतिकता पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं। इंदौर में 29 अप्रैल की दोपहर बाद जो राजनीतिक घटनाक्रम हुआ वह अभूतपूर्व भले न हो, लेकिन चौंकाने वाला जरूर है। घटना के दिन की सुबह तक अक्षय इंदौर में इंदौर में चुनाव प्रचार कर रहे थे। अक्षय को टिकट प्रदेश कांग्रेस अध्यथक्ष जीतू पटवारी की सिफारिश पर दिया गया था, जिसमें अक्षय का धनबली होना मुख्य कारण था। लेकिन अक्षय ऐन वक्त पर जिस तरीके से मैदान छोड़ा, वह जीतू पटवारी की कार्य कुशलता और दूरदर्शिता पर भी सवालिया निशान खड़े करता है। बताया जाता है कि अक्षय पहले ही अपनी पार्टी द्वारा किए जा रहे असहयोग से परेशान थे। उनका जमीनों और कॉलेजों का कारोबार है। कुछ दिनो पहले एक जमीन पर कब्जे के मामले में हिंसक हमले के पुराने प्रकरण में अदालत के आदेश पर एक धारा और बढ़ाई गई थी। इसमे अक्षय की गिरफ्तारी और 7 साल की सजा भी हो सकती थी। कारोबारी अक्षय इस घटनाक्रम से परेशान थे। साथ ही चुनाव खर्च तथा चुनाव प्रचार को लेकर भी उनकी पार्टी नेताओं से नहीं बन रही थी। यूं चुनाव में उनके जीतने की संभावना नहीं के बराबर थी। लेकिन अक्षय इस संभावित हार के मुआवजे के रूप में इंदौर 4 से विधानसभा का टिकट चाहते थे। लेकिन इस मामले में पार्टी ने कोई आश्वासन नहीं दिया। शायद इन्ही सब बातों से खिन्न होकर अक्षय ने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने की जगह भाजपा का दामन थामना बेहतर समझा। अक्षय से नामांकन वापस कराने तथा उन्हें भाजपा में लाने में बीजेपी नेता कैलाश विजयवर्गीय तथा नरोत्तम मिश्रा की खास भूमिका रही। सारा काम तयशुदा स्क्रिप्ट के हिसाब से हुआ। मुख्यमंत्री व आलाकमान को विश्वास में लिया गया और इंदौर में कांग्रेस की चुनौती को दफन कर दिया गया। इसके कांग्रेस के डमी प्रत्याशी का फार्म भी रिजेक्ट हो चुका है। कुल मिलाकर हालात सूरत और खजुराहो सीट जैसे बन रहे हैं। इंदौर में चुनाव एकतरफा हो चुका है। हालांकि इंदौर, सूरत नहीं बन सका है,क्योंकि कुछ निर्दलीय प्रत्याशियों ने नाम वापस लेने से इंकार कर दिया है। ऐसे में कांग्रेस के सामने यही विकल्प है कि वो किसी गैर भाजपाई प्रत्याशी का चुनाव में समर्थन करे, जैसा कि खजुराहो में हमे देखने को मिला। समर्थन देने की स्थिति में भी चुनाव नतीजों पर शून्य असर पड़ने वाला है। यानी जो भी चुनाव होगा, वह लगभग एकतरफा ही होगा। अलबत्ता कुछ भाजपा नेताओं के नंबर जरूर बढ़ जाएंगे। लेकिन यहां असली सवाल नैतिकता और पार्टी के प्रति वैचारिक निष्ठा का है। भाजपा अब किसी भी तरह से चुनाव जीतना चाहती है। अक्षय मामले में ब्लैकमेलिंग और प्रेशर टेटिक्ट्स अपनाने की आशंका जताई जा रही है। दबाव के आगे वो टिक नहीं पाए और फुस्सी बम निकले। लेकिन उससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि कांग्रेसी इतनी जल्दी बिक क्यों रहे हैं? इंदौर तो अक्षय के भाजपा में जाने के बाद लगभग कांग्रेस मुक्त ही हो गया है। लेकिन जो हुआ, उससे चुनाव जैसे लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर बट्टा ही लगा है।

मजदूर उपायों की तलाश आज भी कायम

नजरिया

चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

1 मई 1886 अमेरिका में मजदूर यूनियन ने काम के घंटे आठ से अधिक न रखे जाने के लिए हड़ताल रखी थी। लेकिन इसी समय शिकागो के मार्केट में बम धमाका हुआ और कई लोग हताहत हुए,कुछ लोगों की मृत्यु भी हुई। मार्केट में बम किसके द्वारा फेंका गया इसकी जांच के बिना ही पुलिस ने हड़ताल कर रहे मजदूरों पर गोली चला दी जिसमें सात मजदूरों को अपनी जान गवानी पड़ी। मजदूरों की इस हड़ताल को तत्कालीन कोई सफलता नहीं मिली लेकिन कुछ समय बाद कार्य के घंटों को आठ घंटे किया जाने लगा। इसके पूर्व महिला मजदूरों के द्वारा 1857 में काम के घंटो को कम करने के लिए प्रतिरोध किया गया था जिसका तत्कालीन पुरुष ट्रेड यूनियन ने भी समर्थन नहीं किया था और महिलाओं के इस प्रतिरोध को आसानी से खत्म कर दिया गया था। भारत में मजदूर दिवस की शुरुआत मद्रास वर्तमान के चेन्नई से 1 मई 1923 से होती है। इस दिन मजदूर नेता सिंगरावेल चेट्टियार ने ट्रिप्लीकेन बीच और मद्रास हाईकोर्ट के सामने लोगों की बड़ी संख्या के साथ दो मांगों के लिए प्रदर्शन किया था। पहली,इस दिन को भारत में भी मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाए और दूसरी इस दिन अवकाश घोषित किया जाए। इसी दिन से यह दिवस मजदूरों की एकता,सम्मान और अधिकारों के प्रति जागरूकता के लिए मनाया जाने लगा। भारत सहित विश्व के 80 देशों में मजदूर दिवस 1 मई को ही मनाया जाता है। मजदूर दिवस जिसे 'मई डे' भी कहा जाता है। सोशल कंडीशनिंग के चलते ही हम शारीरिक श्रम करने वाले के काम को छोटा और बौद्धिक या कहे टेबल वर्क को बड़ा आंकते हैं। गांधी जी ने काम की इस श्रेणीबद्धता की अवधारणा का खंडन किया और बौद्धिक श्रम के साथ साथ शारीरिक श्रम के महत्व को प्रतिपादित किया और उसे सभी (आश्रमवासियों) के लिए अनिवार्य बनाया। गांधी कहते भी थे कि 'वकील और नाई के काम की कीमत एक समान होनी चाहिए'। जिससे कार्य की इस श्रेणीबद्धता को संरचना को तोड़ा जा सके। लेनिन और अमेरिकी पूंजीवादी प्रबंध विज्ञानी टेलर ने मजदूरों के बारे में कहा था कि 'मजदूरों की हैसियत एक बड़ी मशीन के एक छोटे पुर्जे 'कॉग इन द मशीन' की है उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। कार्ल मार्क्स ने पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली को मजदूर के अजनबीयत की एक वजह माना था। उत्पादन की प्रणाली भी मजदूर को एक पुर्जे की हैसियत में ला देती है। मार्क्स के अनुसार मजदूरों का शोषण पूंजीवाद का प्रमुख लक्षण है। मार्क्स पूंजीवाद के सारतत्व की व्याख्या इस प्रकार करते है। पूंजीवादी व्यवस्था में धन के जरिए मशीनों और श्रम को खरीदा जाता है ताकि वस्तु का उत्पादन किया जा सके तथा उत्पादित माल (वस्तु) को अधिक दामों में बेचकर अधिशेष मूल्य (सरप्लस वैल्यू) को प्राप्त किया जा सके। चूंकि मजदूर वर्ग के पास पूंजी नहीं होती इसलिए वे अपना श्रम बेचते हैं। अपने एक कार्यदिवस के शुरुआती हिस्से में ही मजदूर अपनी मजदूरी लायक माल का उत्पादन कर देते हैं और कार्य के बाक़ी हिस्सों में वह पूंजीपतियों के लाभ के लिए काम करता है। मजदूरों के शोषण के विचार के पीछे मार्क्स की मूल्य संबंधी अवधारणा थी जिसके आधार में रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित 'मूल्य का श्रम सिद्धांत' था। रिकॉर्डो की तरह ही मार्क्स की भी धारणा यह थी कि 'किसी भी वस्तु का मूल्य उसे उत्पादित करने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष श्रम के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए'। मार्क्स के अनुसार 'मूल्य एक तकनीकी संबंध न होकर मनुष्यों के बीच का एक सामाजिक संबंध भी है जो पूंजीवाद के तहत एक खास तरह का भौतिक रूप अख्तियार कर जिंस या वस्तु के रूप में प्रकट होता है; अर्थात् मूल्य महज एक दिमागी अवधारणा नहीं है, बल्कि पूंजीवादी सामाजिक संबंध उसे भौतिक रूप दे देते हैं। पूंजीवादी व्यवस्था में अधिक से अधिक उत्पादन और लाभ कमाने के लिए जटिल प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है, प्रौद्योगिकी जितनी जटिल होगी उतनी ही हिंसक भी होगी। मनोवैज्ञानिक एरिक फ्राम ने आधुनिक प्रौद्योगिकी पर निर्भर उत्पादन प्रणाली में मनुष्य के एक वस्तु में तब्दील हो जाने की बात कही है और इस व्यवस्था में वह अपने आप को अकेला व असहाय महसूस करता है। जबकि फ्रेडरिक बेनहम का स्पष्ट मत है कि 'मनुष्यता का आर्थिक भविष्य केवल तकनीकी में संभव है'। किसी भी समाज का पिछड़ा या अग्रणी होने की पहचान मात्र यही हो सकती है कि वह किस मात्रा में आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ तकनीकों को अपना चुका है। आर्थिक विकास को जिस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है उसी तरह क्या सामाजिक विकास की भी कोई परिभाषा या पैमाना है? यह प्रश्न इसलिए उत्पन्न होता है कि प्रौद्योगिकी और तकनीकी का समाज पर प्रभाव पड़ता है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। अधिकांश लोगों का मानना यह है कि 'प्रौद्योगिकी देशकाल निरपेक्ष है,मूल्य निरपेक्ष है, न पश्चिमी है, न पूर्वी है, न अच्छी है और न ही बुरी।' इसके साथ ही कुछ लोगों का मानना है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी प्रगति की निशानी है। बहरहाल जब हम प्रौद्योगिकी के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को या उसकी भूमिका का मूल्यांकन करना चाहते हैं तो यह जानना भी आवश्यक है कि उसका वर्ग चरित्र क्या है? अर्थात् प्रौद्योगिकी का विकास, प्रयोग, उपभोग कौन और किसके हितों के लिए कर रहा है और उसके क्या परिणाम निकल रहे हैं? ऐतिहासिक रूप से प्रौद्योगिकी का विकास ज्यादातर पूंजीवाद के संरक्षण में हुआ है। इसलिए आधुनिक प्रौद्योगिकी व उससे जुड़ी तकनीक के साथ पूंजीवाद के स्वार्थ अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक प्रौद्योगिकी पहले से ही मजबूत वर्गों को और अधिक समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का काम करती है। यह राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर देखा जा सकता है, इसमें विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार के देशों के पूंजीपति वर्ग, शक्ति सम्पन्न और प्रौद्योगिकी सम्पन्न सामाजिक समूह आपस में मिलकर अपने पारस्परिक हितों के लिए कार्य करते हैं। प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल इसके नियंत्रकों के द्वारा लोगों की एक जैसी सोच को विकसित करने में भी किया जा रहा है। जब भी आप किसी तकनीक का इस्तेमाल करते हैं तो यह भ्रम हमेशा बना रहता है कि उसका रिमोट कंट्रोल आपके पास है। यहां चुनने की सीमित स्वतंत्रता आपके पास अवश्य है लेकिन उसमें क्या, कब, और कैसे दिखाया जाएगा इसका नियंत्रण किसी और के हाथ में है। यह महज संयोग नहीं है इस पर अलग से विमर्श की दरकार है। वर्तमान समय में हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जहां दो ही वर्ग धीरे धीरे बनने लगे हैं,पहला पूंजीपतियों का (शोषक) का और दूसरा मजदूरों (शोषितों) का चाहे वह कोई भी कार्य कर रहे हो,इसे वैश्विक परिदृश्य में भी देखा जा सकता है। अस्थायी या कॉन्ट्रैक्ट बेस पर कार्य करने वाले समूहों को भी इसमें शामिल किया जा सकता है साथ ही वे किस मानसिक अवसाद से गुजर रहे हैं यह जानना भी आवश्यक है। इस व्यवस्था में हर व्यक्ति एक पुर्जे के समान हैं और उसके घिस जाने पर उसकी जगह लेने वाले कई और पुर्जे तैयार है। भारतीय संदर्भों में सामाजिक राजनीतिक या अन्य समीकरणों के बावजूद भी हमें आर्थिक संदर्भों में देखने समझने की आवश्यकता है। शोषणपरक विभेदपरक यह प्रक्रिया लिंग के आधार पर भी विभेद करती है। महिला मजदूरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति पुरूष मजदूरों से भी अधिक खराब है। कुछ महिलाओं के उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होने तथा मध्य वर्ग की महिलाओं के लिए नए अवसर उपलब्ध होने से ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की स्थिति में अत्यंत सुधार हुआ है। लेकिन इसी के साथ चौंकाने वाले तथ्य भी मौजूद हैं जो पिछले दशकों में निकलकर सामने आए है,कि अधिकांश महिलाओं का स्तर पुरुषों की तुलना में जस का तस बना हुआ है और उनके स्तर में गिरावट आयी है। अगर किसी क्षेत्र में सुधार के संकेत हैं तो वह भी सीमित दायरे में हुए हैं। इसी के साथ कई सामाजिक मान्यताएं भी महिलाओं को घर की दहलीज लांघने से रोकती है। अधिकांश परिवारों में महिलाओं का उपार्जक होना उतना ही शर्मनाक माना जाता है जितना कि पुरुषों का बेकार या कहे निठल्ला होना। महिलाएं मजदूरी के बाजार में अत्यधिक अलाभकारी शर्तों पर प्रवेश करती हैं। अपने परिवार को आर्थिक कठिनाइयों से उबारने के लिए। अधिकांश परिवार और स्वंय महिलाएं भी मजदूरी के कार्यों को थोड़े समय के लिए अपनाती हैं। वे सोचती हैं कि जैसे ही पारिवारिक स्थिति में सुधार होगा तो वे काम छोड़ देंगी। महिलाओं की ट्रेड यूनियन बनाने की पहली कोशिश अहमदाबाद में गांधी जी के द्वारा स्थापित 'टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' (टीएलए) से जुड़े गांधीवादियों की ओर से की गई थी। 1972 में इला भट्ट ने 'सेल्फ -एम्प्लॉयड वीमेंस एसोसिएशन' (सेवा) की स्थापना की। सेवा एक ऐसा संगठन था जो असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं के लिए बनाया गया था। विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत ये महिलाएं लोगों के घरों में काम करने वाली,फेरी लगाने वाली,छोटे कारखानों में करने वाली थी जिनकी आमदनी बहुत कम थी। घरों में घर के मालिक,कारखानों के मालिक व ठेकेदार और गलियों में पुलिस इन्हें प्रताड़ित करती है। इसके अतिरिक्त उनके श्रम को समाजोपयोगी भी नहीं माना जाता था। 'सेवा' संस्था का उद्देश्य महिलाओं को प्रशिक्षित कर,तकनीकी सहायता एवं मोलभाव करने के कौशल से दक्ष करना था ताकि उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सके। इसके साथ ही यह संस्था गांधीवादी मूल्यों के प्रति महिलाओं को प्रेरित करने के लिए भी कृतसंकल्प है। एक ट्रेड यूनियन के रूप में 'सेवा' के रजिस्ट्रेशन में काफी परेशानियां आई क्योंकि भारतीय ट्रेड यूनियन कानून के अंतर्गत किसी यूनियन को अधिकृत मान्यता तभी प्रदान की जाती थी जब वह किसी फैक्टरी विशेष या किसी नियोक्ता विशेष के द्वारा बनाई गई हो। 'सेवा' इनमें से किसी भी अहर्तता को पूर्ण नहीं करती थी। टीएलए के सनर्थन से 'सेवा' ने दलील दी कि किसी यूनियन के लिए इन शर्तों को पूरा करना आवश्यक नहीं है। यूनियन का आधार उसके सदस्यों का विकास होना चाहिए। विकास को परिभाषित करते हुए 'सेवा' ने तर्क दिया कि विकास का अर्थ है 'शोषण से मुक्ति,नियमित कार्य की गारंटी तथा उन्नत व विकसित तकनीक को सीखने के लिए सदस्यों को अवसर प्रदान करना था'। 'सेवा' की इन दलीलों को मान लिया गया और 'सेवा' ट्रेड यूनियन एक्ट के तहत रजिस्टर्ड संस्था बन गई। वर्तमान समय में भी 'सेवा' महिलाओं के उत्थान और अधिकारों के लिए समर्पित संस्था है। भारत में 1960 के बाद से ही मजदूरों की एकता को तोड़ने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। सरकारी संरक्षण में ऐसे गिरोहों को आगे बढ़ाया गया जो ट्रेड यूनियन आंदोलन में कामगारों की एकता को तोड़ने के लिए साम्प्रदायिकता और क्षेत्रवाद का सहारा भी लेता है। इसके साथ ही ट्रेड यूनियन के नेताओं को लालच,भय से भ्रष्ट करने का काम भी किया गया। हिंसा और हत्याओं का दौर भी चला जिसमें कृष्ण देसाई और शंकर गुहा नियोगी जैसे मजदूर नेताओं की हत्या भी की गई। नई अर्थव्यवस्था लागू होने के बाद से ट्रेड यूनियनों के पास मजदूर अधिकारों और हितों के संरक्षण की ताकत नहीं बची। जिसका फायदा केंद्र सरकार,राज्य सरकार और पूंजीपतियों ने मजदूर विरोधी नियम कायदे और कानून बनाकर उठाया। मजदूरों द्वारा प्रदर्शन,हड़ताल,काम को रोका जाना अपराध माना जाने लगा है। कमोबेश यही स्थिति हर क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों, मजदूरों की है चाहे वे शारीरिक श्रम करने वाले हो अथवा बौद्धिक या टेबल वर्क करने वाले की है। वर्तमान समय की यह मांग है कि सभी क्षेत्रों में कार्यरत कर्मी चाहे वे किसी भी जाति,धर्म या लिंग के हो, एकजुट हो और अपनी एकजुटता का प्रदर्शन करें। जो संरचनागत ढांचें और पदानुक्रम की व्यवस्था को तोड़ कर एक साथ एक प्लेटफार्म पर अपने अधिकारों और दूसरों के अधिकारों और निजी हितों के प्रति सचेत और जागरूक हो अपने दायित्वों का निर्वहन करें।

चुनाव 2024

गौरव अवस्थी

अमेठी : क्या 'राहुल फोबिया' से ग्रस्त हैं स्मृति ईरानी?

2024 के आम चुनाव की बिसात बिछ चुकी है। चुनावी योद्धा अपने-अपने मोर्चे पर डटे हुए हैं। इसी में एक है केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी। अपने बयानों से हमेशा चर्चा में रहने वाली ईरानी आजकल इस अमेठी में ज्यादा सक्रिय हैं, जिसे उन्होंने 'अपना' बना लिया है। अपना बनाने का मतलब आशियाने से है। 'बेघर' राहुल गांधी को 2019 के पिछले आम चुनाव में परस्त कर ईरानी ने राहुल गांधी को राजनीतिक रूप से भी 'बेघर' कर दिया। यहां यह बताना जरूरी है कि राहुल गांधी का अमेठी में अपना कोई घर नहीं है। वह राजीव गांधी चाइल्ड टेबल ट्रस्ट या राजीव गांधी फाउंडेशन द्वारा संचालित संजय गांधी अस्पताल के गेस्ट हाउस से ही अपनी चुनावी गतिविधियां चलाएं रखते थे।

पिछले चुनाव में 55000 वोटों से जीत दर्ज कराने वाली ईरानी अब अमेठी की वोटर और भाजपा की प्रत्याशी दोनों ही हैं। चुनाव की घोषणा होने के बाद से ही ईरानी लगातार अमेठी संसदीय क्षेत्र में जनसंपर्क करने में जुटी हैं। इसमें कोई नई बात नहीं। यह तो प्रत्याशी का धर्म ही है। अमेठी में अपना आशियाना बनाने के बाद उन्होंने खुद को 'अजेय' मान ही लिया। छोटे पर्दे की लोकप्रिय अभिनेत्री होने के चलते फिल्मों के एक चर्चित गाने- 'जीना यहां मरना यहां.. इसके सिवा जाना कहां..' वाला भाव भी प्रदर्शित किया। गृह प्रवेश के मौके पर भी राहुल गांधी पर तंज करने से वह नहीं चूकी थीं।

जैसे-जैसे चुनाव की सक्रियता बढ़ती गई वैसे-वैसे स्मृति ईरानी राजनीतिक रूप से बेघर बनाए जा चुके राहुल गांधी के नाम की 'रट' भी बढ़ाती चली जा रही हैं। उनका कोई भी भाषण राहुल नाम के बिना पूरा ही नहीं होता जैसे कोई यज्ञ बिना 'स्वाहा' की ध्वनि के संपन्न नहीं होता। जिस चुनाव में उन्हें 5 साल में कराए गए विकास कार्यों की रट लगानी चाहिए थी, उस चुनाव में वह राम नाम से ज्यादा राहुल नाम इस समय जप रही हैं। बीच-बीच में वह 5 साल में कराए गए काम के बारे में भी बताती है लेकिन इतनी दमदारी से नहीं जितनी गंभीरता राहुल नाम को लेकर उनके भाषणों में दिखती है। हालांकि उनका दावा रहता है कि अमेठी में 5 साल में वह

काम कर दिए जो आज तक प्रधानमंत्री रहते राजीव गांधी भी नहीं कर पाए। राहुल गांधी द्वारा कराए गए कामों को वह कोई काम मानती ही नहीं लेकिन कांग्रेस के मीडिया प्रभारी अनिल सिंह उनके किनारे कई कामों को राहुल गांधी द्वारा प्रारंभ किया हुआ मानते हैं। भाजपा कार्यकर्ता और आम मतदाता भी हैरान है कि आखिर सांसद स्मृति ईरानी उन राहुल गांधी पर इतना हमलावर क्यों है? जिन्होंने अभी तक अमेठी से चुनाव लड़ने की घोषणा तक नहीं की है।

रायबरेली के राजनीतिक विश्लेषक डॉ राम बहादुर वर्मा मानते हैं कि स्मृति ईरानी इस समय 'राहुल फोबिया' से ग्रसित नजर आ रही हैं। कांग्रेस और गांधी परिवार जब रायबरेली और अमेठी के बारे में अंतिम क्षण तक फैसला नहीं कर पा रहा है तब स्मृति ईरानी ने अपनी सभा में इस बात का ऐलान तक कर दिया कि 26 के बाद राहुल गांधी अमेठी आ जाएंगे। राहुल नाम रटने के पीछे एक यही कारण माना जा सकता है कि कोई उनसे 5 साल का हिसाब न मांगे और जवाबदेही तय न की जा सके लेकिन सुल्तानपुर के वरिष्ठ पत्रकार राज खन्ना इसे सुनियोजित रणनीति मानते हैं। वह कहते हैं कि स्मृति ईरानी उस रणनीति पर अमल कर रही है जिसमें कहा जाता है कि इतना शोर करो कि दुश्मन आने की हिम्मत ही न जुटा पाए। वह यह भी कहते हैं कि इसकी वजह देने वाले भी खुद राहुल गांधी हैं हारने के बाद अगर वह 5 साल अमेठी से अपना संपर्क न तोड़ते तो आज स्मृति ईरानी के इन हमलों का जवाब जनता खुद दे रही होती। उनका मानना है कि राहुल पर हमले इसलिए ज्यादा प्रसारित हो रहे हैं कि मीडिया भाषण के उन्हीं अंशों को हाईलाइट करता है, जो पढ़ने में चटपटे हों।

यह 20 मई को अमेठी के मतदाता तय करेंगे कि राहुल नाम की रट स्मृति ईरानी को चुनावी वैतरणी पार कराएगी या उनका वोट बैंक चट कर जाएगी। अमेठी में पांचवें चरण में मतदान होना है नामांकन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है लेकिन गांधी परिवार अभी भी असमंजस में है।

फिर बोतल से बाहर आया आरक्षण का जिन्न

मुद्दा

बाल मुकुन्द ओझा
लेखक स्तंभकार हैं।

आरक्षण के पक्ष और विपक्ष में सियासी बयानबाजी से देश एक बार फिर सुलगने लगा है। जैसे ही चुनाव आते है आरक्षण को लेकर नेताओं के स्वर तेज हो जाते है। देश भर में चल रहे चुनावी माहौल के बीच भाजपा और कांग्रेस में आरक्षण को लेकर बयानबाजियां चल रही हैं। वोटों की फसल काटने का यह दुधारू और भोथरा हथियार बन गया है। आरक्षण की गंगा में नहाने के लिए सभी लोग प्रयासरत है। लोकसभा चुनाव के दो चरण बीत चुके हैं, लेकिन इसी बीच आरक्षण का जिन्न एक बार फिर बोतल से बाहर आ गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा आरक्षण खत्म करना चाहती है तो भाजपा ने उन पर झूठ बोलने का आरोप लगाते कहा कि कांग्रेस ने दलितों और ओबीसी का आरक्षण छीनकर मुसलमानों को दे दिया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भी संविधान प्रदत आरक्षण का समर्थन किया है। संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत ने कहा कि संगठन भेदभाव व्याप्त रहने तक आरक्षण लागू रखने की वकालत करता है।

मोदी के 400 पार के नारे के जवाब में विपक्ष ने इसे आरक्षण से जोड़ दिया है। हालांकि विपक्ष की इस मंशा को भांपकर बीजेपी और संघ सतर्क हो गया है। यही वजह है कि संघ प्रमुख मोहन भागवत ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि जब तक जरुरत होगी आरक्षण जारी रहेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने भी रविवार को अपनी चुनावी सभाओं के दौरान साफ कर दिया कि आरक्षण खत्म नहीं होने जा रहा है। सियासत में आरक्षण, ध्रुवीकरण और जातिवाद बेहद संवेदनशील मुद्दा है। चुनाव के दौरान राजनीतिक दल इसे जमकर भुनाते हैं।

संविधान निर्माताओं ने दलितों-पिछड़ों को समाज में बराबरी का दर्जा देने की मंशा से आरक्षण लागू किया था। मगर संविधान की भावना पर सियासत भारी पड़ी। आरक्षण को लेकर देश में शुरू से ही दुविधा की स्थिति हो रही है। कोई सर्व मान्य हल नहीं निकलने के कारण आरक्षण को लेकर देश भ्रमजाल से नहीं निकल पा रहा है। संविधान की भावना कभी भी जाति आधारित आरक्षण की नहीं थी बल्कि सामाजिक व शैक्षणिक रूप से पिछड़े लोगों को बराबरी पर लाने की थी। जब संविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी ने स्वयं से पिछड़ा वर्ग शब्द जोड़ा था तो सवाल उठे थे। उस समय डॉ अंबेडकर ने सदस्यों को यह कह कर संतुष्ट कर दिया था कि ये भविष्य में सरकार के विवेकाधिकार पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक बराबरी का लक्ष्य हासिल करने के लिए संविधान में जिस आरक्षण की व्यवस्था की गई थी, वह लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं, यह आज भी बहस का मुद्दा है। यह सही है आरक्षण ने कमजोर वर्ग में एक मलाईदार तबका भी पैदा किया है, जिसके कारण इसका पूरा लाभ जरूरतमंदों को नहीं मिल पाता, पर इसका मतलब यह नहीं कि आरक्षण की व्यवस्था ही खत्म कर दी जाए। दरअसल आरक्षण में व्याप्त विसंगतियां राजनीतिक पार्टियों की सोच का नतीजा हैं, जिनके लिए आरक्षण अपनी सत्ता बचाए रखने का औजार है। हमारे देश में आरक्षण पर राजनीति और दुष्प्रचार कब तक होता रहेगा। यह एक ज्वलन्त विषय है, जो अभी तक भी आम जनता की समझ से परे नजर आ रहा है। हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने जो फैसला दिया है। उसे लेकर भी राजनीतिक दल भ्रम फैला रहे हैं। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने पहले भी यह फैसला दिया था कि सरकारी नौकरी में प्रमोशन के अवसर पर आरक्षण देने के लिए बाध्यता नहीं है। मगर इस फैसले की आड़ में यह दुष्प्रचार किया जा रहा है कि सर्वोच्च न्यायालय आरक्षण को ही खत्म करने जा रहा है। न्यायालय के फैसले के साथ साथ यह भी प्रचारित किया जा रहा है कि केंद्र सरकार भी इसके लिए जिम्मेदार है। अनेक प्रमुख राजनेता व राजनैतिक दल न्यायालय के इस फैसले को तीन तलाक, धारा 370 तथा नागरिकता संशोधन कानून से जोड़ रहे हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान निर्माताओं की उस व्यवस्था व भावना को उल्लेखित किया है, जिसके अंतर्गत आरक्षण को मूलभूत अधिकार नहीं माना गया है। यह भी सच है कि सामाजिक न्याय के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत के संविधान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण की व्यवस्था दी हुई है। साथ ही सच्चाई यह भी है कि स्वयं संविधान निर्माता इस व्यवस्था को लंबे काल तक चलाने के लिए पक्ष में नहीं थे।

गौरतलब है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था और सामाजिक न्याय बराबरी की बेसिक चीजें हैं। आरक्षण उस तक पहुंचने का एक तरीका भर है, मगर कोई मौलिक अधिकार नहीं है। आरक्षण को तब तक ही लागू रखा जाना आवश्यक प्रतीत होता है। जब तक कि इस प्रकार के आरक्षण के लिए धरातल पर यथोचित आधार हैं। मगर हमारे यहां मामला सिर्फ जातिगत आरक्षण के आधार पर टिका हुआ है। यद्यपि जातिगत आरक्षण जारी है। शिक्षा और नौकरी में प्रवेश के स्तर पर आरक्षण अभी तक कायम है। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने सिर्फ और सिर्फ इस बात पर निर्णय दिया है कि प्रमोशन के दौरान आरक्षण दिया जाना कोई आवश्यक नहीं। इसके बावजूद पूर्वाग्रह तथा दुष्प्रचार सिर्फ स्वार्थ को राजनीति है और सामाजिक व्यवस्था के लिए यह सब विषम साबित होता जा रहा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शशांक दुबे
लेखक व्यंग्यकार हैं।

न सूत, न कपास

वह मूर्खों का गांव था। गांव में दो ही तरह के लोग हुआ करते थे, एक तो भोले मूर्ख और दूसरे शातिर मूर्ख। अब आप कहेंगे, मूर्ख और शातिर! भला यह कैसे संभव है? अब कर दी ना आपने गंवड़ेले लोगों जैसी बात। भई, शातिर मूर्ख वह होता है जो होता तो मूर्ख ही है, लेकिन अपने गुट के लोगों को छोड़कर बाकी सभी को मूर्ख समझता है। जबकि भोला मूर्ख वह होता है जो अपने सहित सभी को समझदार समझता है। चूंकि गांव भारत का ही था, इसलिए वहां भी चुनाव के मौसम में चुनाव आ गए। जैसे ही चुनाव की घोषणा हुई, सारे मूर्खों की बैटरी भनभना के चार्ज हो उठी। भोले मूर्ख चाहते थे कि कोई शातिर आदमी उनका नेतृत्व करे, क्योंकि यदि हमारे जैसे किसी भोले भाले के हाथ में सत्ता आ गई, तो ये शातिर ओन तो हमको नाको चने चबवा देंगे। दूसरी तरफ शातिर मूर्ख यह चाहते थे कि एक निहायत ही बेंडे किस्म का मूर्ख उनका नेतृत्व करे, ताकि उस मूर्ख की आड़ में वे भोले मूर्खों को थोड़ा और मूर्ख बना सकें।

भोले मूर्ख बिलकुल गऊ की तरह थे। गऊ मतलब वह रात में घुस कर फसलें चौपट करने वाली गऊ नहीं, वही जो गांव कस्बों में सब्जी मार्केट से लेकर प्लेटफॉर्म नंबर 'एकमात्र' तक सब्जियों में मुंह मारते, यत्र तत्र पोटे करते डोलती फिरती दिखाई देती है। भोले मूर्खों का एक ही कहना था कि भले हम आधी रोटी खाएंगे पर शातिर को ही लाएंगे। वैसे यह आधी रोटी वाली बात, एक तरह का जुमला था, जो वे इन दिनों तेजी से सीख रहे थे। हकीकत में तो वे गऊ जैसे लोग दोनों टाइम फ्री फंड का राशन खा खाकर सांड जैसे मुश्टंडे हुए जा रहे थे। मुश्टंडे तो शातिर लोग भी हो रहे थे, लेकिन चौबीस घंटे 'ऐनी टाइम ऐनी व्हेयर' हुकूमत को कोस कोस कर अपनी चर्बी पिघलाने में कामयाब हो रहे थे।

मौसम गर्मी का था, ऊपर से चुनावी माहौल ने गर्मी और भी बढ़ा दी। भोले के शातिर समर्थक और शातिर के भोले समर्थक आमने सामने थे। आमने सामने मतलब ताल ठोककर मैदान में नहीं। फ्री के डाटा के बल पर अपने अपने मोबाइल पर सवार हो वाट्स एप के मैदान में। गांव था तो क्या हुआ, आसपास के शहर कस्बों की हवा भी तो लगनी थी। दोनों तरफ से मिसाइलें दागी जा रही थीं, पारा थर्मामीटर को तोड़ने को लगभग तैयार ही था के अचानक बिजली का बड़ा फाल्ट हो गया। अब गाँव में बिजली शहरों जैसी एकाध घंटे के लिए तो जाती नहीं। वह तो लंबी निकल ली थी, बिल्कुल निश्छलता की तरह। बिजली तो गई ही गई, नेटवर्क भी चला गया। अब बापड़े क्या करें? घर में पड़े पड़े हिंदी अखबार को घुमा घुमा कर कित्ती देर हवा करें? किससे लड़ें, किसे कोसें, किसे डराएं, किसे भड़काएं? घर से बाहर निकलें तो और भी गर्मी, भीतर रहें तो दिमाग की गर्मी। राहत पाने के लिए दोनों ही तरह के मूर्ख गांव के एकमात्र तालाब किनारे पहुंच गए। किनारे पर ठंडी हवा चल रही थी और अंदर ठंडा पानी लहरा रहा था। घुस गए सब तालाब में। घंटे भर बाद बाहर निकले। सारी गर्मी छंट चुकी थी। शाम ढल चुकी थी। घड़ी 'एट पी एम' बजना चाहती थी। अब भोले और शातिर ने बच्चों की पत्रिका में संग साथ दिखने वाले 'शेर खरगोश' के रेखाचित्र की ही तरह हाथ थाम रखा था। पता नहीं, खबर पक्की थी या चैनल वालों जैसी कि अब वोट पड़ने वाले दिन तक बिजली नहीं आने वाली थी।

मजदूर दिवस पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

आखिर कब तक मजबूर रहेगा मजदूर

श्रमिक अपना श्रम बेचकर न्यूनतम वेतन प्राप्त करता है। यही कारण है कि पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है। इसलिए यह दिन अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संघों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए है। इस प्रकार, यह समाज में उनके योगदान की सराहना करने और उसे पहचानने का एक विशेष दिन हैं। भारत सहित दुनिया के बहुत से देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य उस दिन मजदूरों की भलाई के लिए काम करने व मजदूरों में उनके अधिकारों के प्रति जागृति लाना होता है। मगर आज तक तो कहीं ऐसा हो नहीं पाया है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तरक्की करता है। लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। हमारे देश में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। समय बीतने के साथ मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म बनकर रह गया है।

मजदूर दिवस दुनिया के सभी कामगारों, श्रमिकों को समर्पित होता है। इस बार की अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस 2024 की थीम है सामाजिक न्याय और सभी के लिए सभ्य कार्य। इसके अलावा भी कई बिंदुओं को रखा गया है। इस थीम का उद्देश है मज़दूरों की गरिमा का ख्याल रखना और उन्हें शांतिपूर्ण कामकाजी वातावरण प्रदान करना।

महात्मा गांधी ने कहा था कि किसी देश की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है। उद्योगपति खुद को मालिक समझने की बजाय अपने-आप को ट्रस्टी समझे। मगर ऐसा होता नहीं है। मालिक आज भी मालिक बने हुये हैं। मजदूर सिर्फ मजबूर होकर रह गया है। इसी कारण भारत में मजदूरों की स्थिति बेहतर नहीं है। हमारे देश की सरकार भी मजदूर हितों के लिए बहुत बातें करती है। बहुत सी योजनाएं व कानून बनाती है। मगर जब उनको अमलीजामा पहनाने का समय आता है तो सब इधर-उधर ताकने लग जाते हैं। मजदूर फिर बेचारा मजबूर बनकर रह जाता है।

गुरु नानक देव जी ने भी अपने समय में किसानों, मजदूरों और कामगारों के हक में आवाज उठाई थी। गुरु नानक देव जी ने 'काम करना, नाम जपना, बांट छकना और दसवंध निकालना का संदेश दिया था। गरीब मजदूर और कामगार का विनम्रता का राज स्थापित करने के लिए मनमुख से गुरमुख तक की यात्रा करने का संदेश दिया था।

मजदूर एक ऐसा शब्द है जिसके बोलने में ही मजबूरी झलकती है। सबसे अधिक मेहनत करने वाला मजदूर आज भी सबसे अधिक बदहाल स्थिति में है। दुनिया में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां मजदूरों की स्थिति में सुधार हो पाया है। दुनिया के सभी देशों की सरकार मजदूरों के हित के लिए बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करती हैं मगर जब उनकी भलाई के लिए कुछ करने का समय आता है तो सभी पीछे हट जाती है। इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाता है।

भारत में एक मई का दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई 1923 को मद्रास दिवस के तौर पर मनाना शुरू किया गया था। इस की शुरुआत भारती मजदूर किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगरावेलू चेट्यार ने शुरू की थी। भारत में मद्रास के हाईकोर्ट सामने एक बड़ा प्रदर्शन किया और एक संकल्प के पास करके यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाये और इस दिन छुट्टी का ऐलान किया जाये। वर्तमान में भारत समेत

लगभग 80 मुल्कों में पहली मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है।

हमारे देश केमजदूरों को न तो मालिकों द्वारा किए गए कार्य की पूरी मजदूरी दी जाती है और ना ही अन्य वांछित सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है। गांव में खेती के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है। इस कारण बड़ी संख्या में लोग मजदूरी करने के लिए शहरों की तरफ पलायन कर जाते हैं। जहां ना उनके रहने की कोई सही व्यवस्था होती है ही उनको कोई ढंग का काम मिल पाता है। मगर आर्थिक कमजोरी के चलते शहरों में रहने वाले मजदूर वर्ग जैसे तैसे कर वहां अपना गुजर-बसर करते हैं।

बड़े शहरों में झोंपड़ पट्टी बस्तियों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। जहां रहने वाले लोगों को कैसी विषम परिस्थितियों का सामना करता है। इसको देखने की न तो सरकार को फुर्सत है ना हीं किसी राजनीतिक दलों के नेताओं को। झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले मजदूरों को शौचालय जाने के लिए भी घंटों लाइनों में खड़ा रहना पड़ता है। झोपड़ पट्टी बस्तियों में ना रोशनी की सुविधा रहती है। ना पीने को साफ पानी मिलता है और ना ही स्वच्छ वातावरण। शहर के किसी गंदे नाले के आसपास बसने वाली झोपड़ पट्टियों में रहने वाले गरीब तबके के मजदूर कैसा नारकीय जीवन गुजारते हैं। उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। मगर इसको अपनी नियति मान कर पूरी मेहनत से अपने मालिकों के यहां काम करने वाले मजदूरों के प्रति मालिकों के मन में जरा भी सहानुभूति के भाव नहीं रहते हैं। उनसे 12-12 घंटे लगातार काम करवाया जाता है। घंटो धूप में खड़े रहकर बड़ी बड़ी कोठियां बनाने वाले मजदूरों को एक छप्पर तक नसीब नहीं हो पाता है।

हमारे देश में आज सबसे ज्यादा काई प्रताड़ित व उपेक्षित है तो वो मजदूर वर्ग है। मजदूरो की सुनने वाला देश में कोई नहीं हैं। कारखानों में काम करने वाले मजदूरो पर हर वक्त इस बात की तलवार लटकती रहती है कि ना जाने कब मालिक उनकी छटनी कर काम से हटा दे। कारखानों में कार्यरत मजदूरों से निर्धारित समय से अधिक काम लिया जाता है। विरोध करने पर काम से हटाने की धमकी दी जाती है। मजबूरी में मजदूर कारखाने के मालिक की शर्तों पर काम करने को मजबूर होता है। कारखानो में श्रम विभाग के मापदण्डों के अनुसार किसी भी तरह की कोई सुविधायें नहीं दी जाती है।

कई कारखानों में तो मजदूरों से खतरनाक काम करवाया जाता है जिस कारण उनको कई प्रकार की बिमारियां लग जाती है। कारखानों में मजदूरो को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा, पीने का साफ पानी, विश्राम की सुविधा तक उपलब्ध नहीं करवायी जाती है। मालिको द्वारा निरंतर मजदूरों का शोषण किया जाता है। मगर मजदूरों के हितों की रक्षा के लिये बनी मजदूर यूनियनों को मजदूरों की बजाय मालिकों की ज्यादा चिंता रहती है। हालांकि कुछ मजदूर यूनियने अपना फर्ज भी निभाती है मगर उनकी संख्या कम है।

हमारे देश का मजदूर दिन प्रतिदिन और अधिक गरीब होता जा रहा है। दिन रात रोजी-रोटी के जुगाड़ में जद्दोजहद करने वाले मजदूर को तो दो जून की रोटी मिल जाए तो मानों सब कुछ मिल गया। आजादी के इतने सालो में भले ही देश में बहुत कुछ बदल गया होगा। लेकिन मजदूरों के हालात तो आज भी नहीं बदले हैं तो फिर श्रमिक वर्ग किस लिये मजदूर दिवस मनाये।

हर बार मजदूर दिवस के अवसर पर सरकारे मजदूरो के हित की योजनाओं के बड़े-बड़े विज्ञापन जारी करती है। जिनमें मजदूरों के हितों की बहुत सी बाते लिखी होती हैं। किन्तु उनमें से अमल किसी बात पर नहीं हो पाता है। देश में सभी राजनीतिक दलों ने अपने यहां मजदूर संगठन बना रखे हैं। सभी दल दावा करते हैं कि उनका दल मजदूरो के भले के लिये काम करता है। मगर ये सिर्फ कहने सुनने में ही अच्छा लगता है हकीकत इससे कहीं उलटी हैं।

कृषि

फूलदेव पटेल

किसानों की जरूरत और पराली संकट का समाधान

हम लोग बहुत मजबूर हैं, समयानुसार खेतों की जुताई-बुआई करनी पड़ती है. खेतों में सिंचाई तो स्वयं कर लेते हैं, लेकिन तैयार फसलों की कटाई के समय बहुत दिक्कत होती है. एक मजदूर को कम-से-कम चार सौ रुपये चुकाना पड़ता है. मजदूर केवल फसलों की कटाई करके चले जाते हैं और खेतों से पराली के अवशेष हटाने के लिए अलग से चार सौ रुपये देने पडते हैं. अब हम लोग आर्थिक रूप से इतने समृद्ध किसान तो हैं नहीं कि पराली हटाने के लिए मजदूर को अलग से 400 रुपए दें, इसलिए इसको खेत में ही जला देते हैं. दूसरी बात है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अब मवेशियों की संख्या भी बहुत कम होने के कारण कोई फसलों के अवशेष खरीदने भी नहीं आता हैं. ऐसी स्थिति में खेतों में ही फसलों के अवशेष को जलाने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं होता है. यह कहना है बिहार का दूसरा सबसे बड़ा शहर कहा जाने वाला मुजफ्फरपुर के ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों का.

दरअसल बिहार के कई इलाकों में इन दिनों गेहूं की फसल कटाई का काम लगभग पूरा हो चुका है. अब खेतों में उसके अवशेष पड़े हैं जिनको हटाने के बाद ही अगली फसल के लिए खेत को तैयार किया जा सकता है. लेकिन उसे हटाने के लिए भी मजदूर अतिरिक्त पैसों की डिमांड करते हैं जिसे पूरा करने में असमर्थ आर्थिक रूप से कमजोर किसान अब उस अवशेष को खेत में ही जलाने पर मजबूर हो जाते हैं. इसका असर राज्य के पर्यावरण पर नजर आने लगा है. अब दिल्ली की तरह ही बिहार में भी वायु प्रदूषण का लेवल खतरनाक स्तर तक बढ़ने लगा है. इसमें उद्योगों से निकलने वाले जहरीले धुएं भी जिम्मेदार हैं तो वहीं किसानों द्वारा फसलों के जलाए जाने वाले अवशेष भी अहम भूमिका निभा रहे हैं. हालांकि बिहार में भी पराली जलाना कानूनन अपराध है लेकिन इसके बावजूद यह रुकने का नाम नहीं ले रहा है.

इस संबंध में मुजफ्फरपुर जिला के पारू प्रखंड की स्थानीय महिला किसान शांति देवी कहती है कि 'हम लोग बहुत छोटे स्तर के किसान हैं. किसी तरह से अपने खेतों में ट्रैक्टर से जुताई-बुवाई और सिंचाई कर लेते है. सोहनी (खरपतवार साफ करना) भी अपने से ही करते हैं क्योंकि इसके लिए एक मजदूर को तीन घंटे के लिए अस्सी रुपये देने पड़ते हैं. वह भी एक दिन में दस धुर यानी आधा कट्ठा खेतों में सोहनी कर पाता है. तैयार फसल को बेचने के बाद होने वाली आमदनी खेतों में जुताई-बुआई, सिंचाई, सोहनी, खाद्य बीज, मजदूरी आदि काट कर हमें कुछ नहीं बचता है. ऐसी स्थिति में खेत का पुआल (पराली) को कहां ले जाएं? गांव में मवेशी भी बहुत कम होते जा रहे हैं. इसलिए उनके चारे के लिए इसे कोई खरीदता भी नहीं है. मजबूरीवश हम लोग खेतों में ही पुआल को जला देते हैं. वह बताती हैं कि अक्टूबर-नवंबर के समय जब धान की कटाई होती है, उसके बाद सबसे अधिक पराली जलाई जाती है.'

वहीं नाम नहीं बताने की शर्त पर सरैया प्रखंड के कुछ किसानों ने बताया कि 'हमें मालूम है कि पुआल जलाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है और यह अपराध भी है. लेकिन हम इसका क्या करें? इसका निस्तारण कहां और कैसे करना है कि हमें आर्थिक बोझ भी न पड़े, यह बताने वाला कोई नहीं है. सरकार पराली जलाने से रोकने के लिए जितना सख्त कदम उठाती है, यदि इसके निस्तारण की व्यवस्था पर भी इतनी ही सक्रियता दिखाए तो इसे जलाने की नौबत ही नहीं आएगी.' इन किसानों का कहना है कि अधिकतर आर्थिक रूप से कमजोर किसान ही अंत में पुआल जलाने का काम करते हैं.

इस संबंध में हुस्सेपुर पंचायत के पैक्स (प्राइमरी ऐग्रिकल्चर क्रेडिट सोसाइटी) अध्यक्ष विद्दु कुमार यादव कहते हैं कि 'पराली जलाने वाली स्थिति के पीछे किसानों को फसल तैयार होने पर उसका उचित दाम नहीं मिलना और महंगाई एक बड़ा कारण है. दियारा इलाके के पशुपालक पहले धान या गेहूं के अवशेष मवेशियों को चारे के साथ देते थे. अब मवेशियों की संख्या भी कम होती जा रही है. उधर किसानों को फसल के अवशेष खेतों से लाने में महंगा पड़ता है. उन्हें उसका उचित दाम भी नहीं मिलता है. यही कारण है कि वह खेतों में ही अवशेष जलाने को मजबूर हैं.' वह कहते हैं कि 'आज के समय में किसानों को खेती करना बहुत महंगा साबित हो रहा है. इसका मुख्य कारण मजदूरों की समस्या है. मजदूर नहीं मिलने से किसानों को फसलों की बुआई से लेकर उसकी कटाई तक यंत्रों का उपयोग अधिक किया जाता है. फसलों की दौनी (हार्वेस्टिंग) मशीनों से की जाती है.'

फलस्वरूप उसके अवशेष खेतों में ही रह जाते हैं. जिसे पराली के रूप में जलाया जाने लगा है. इससे खेतों की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है. साथ ही पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है. इस साल धान की फसल को किसानों ने ट्रैक्टर के माध्यम से दौनी कराने के बाद फसलों के अवशेष को खेतों में ही जला दिया. सरकार के लाख प्रयास के बावजूद भी किसानों ने नहीं माना. हालांकि पराली जलाने से खेतों की मिट्टी उपजाऊ नहीं रहती है. जहां-जहां भी पराली जलाई गई वहां की मिट्टी क्षारीय हो गई है. वहां फसल ही नहीं हुई. इसीलिए इस बार गेहूं की फसल पर प्रभाव पड़ा है. ऐसे में यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाया गया तो आने वाले समय में पूरी जमीन क्षारीय हो सकती है.

मुजफ्फरपुर स्थित कृषि विभाग में प्रखंड तकनीकी प्रबंधक (बीटीएम) प्रभारी विक्की कुमार कहते हैं कि 'सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटक व चौपाल लगाकर किसानों को जागरूक किया जाता है कि वह अपने खेतों में फसल अवशेष यानी पराली न जलाएं. इससे खेतों की उर्वरता खत्म हो जाती है और खेत बंजर हो जाता है. वहीं इससे पर्यावरण दूषित होने के कारण तरह-तरह की बीमारियां होती हैं. यह कानूनन अपराध भी है. अगर खेतों में पराली जलाने वाले पकड़े जाएंगे तो उन्हें सरकार के सभी लाभकारी योजनाओं से वंचित कर दिया जाएगा.'

विगत कई वर्षों से स्थानीय स्तर पर कृषि से जुड़े मुद्दों पर लिख रहे स्तंभकार अमृतांज इंदीवर कहते हैं कि धान या गेंहू की पराली जलाने के बजाए जैविक खाद, बायोमास ऊर्जा, मशरूम शेड बनाने में उसका उपयोग किया जाये तो काफी हद तक समस्या का समाधान किया जा सकता है. खेत में पराली जलाना भारतीय दंड संहिता 188 के तहत गैरकानूनी है। दोषी पाये जाने वाले पर 6 माह की सजा के साथ 15 हजार जुर्माने का प्रावधान वर्णित है. दूसरी बात यह भी है कि पराली जलाने से वायुमंडल में प्रदूषण के छोटे-छोटे कणों का स्तर खतरनाक स्तर तक बढ़ जाता है. परिणामतः सांस की तकलीफ, सिरदर्द, दमा कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है. इसके अलावा मिट्टी की उपज भी काफी प्रभावित होती है. पराली जलाने के वक्त तापमान अत्यधिक बढ़ने की वजह से मिट्टी के अंदर मौजूद मित्रकीट मर जाते हैं.

हाल ही में बिहार सरकार ने एडवाइजरी निकालकर किसानों को अगाह किया था कि जो किसान पराली जलाएंगे उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं दिया जाएगा. सरकार ने एक्शन मोड में आकर वैसे किसानों को सेटेलाइट से चिन्हित करके डीबीटी अनुदान पर रोक भी लगा दी थी. कृषि विभाग के विभिन्न प्रमुख संस्थानों के अधिकारियों एवं पंचायती राज को भी पराली जलाने वाले किसानों पर कड़ी नजर रखने को कहा गया था. इसके बावजूद धान की कटाई के बाद किसान खेतों में पड़े अवशेषों को गाहे-बगाहे जलाते रहते हैं.

अमृतांज कहते हैं कि यह अजीब विडंबना है कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को लेकर सभाएं, सम्मेलन व संगोष्ठियां आयोजित होती रहती हैं. खासकर स्कूल-कॉलेजों के विद्यार्थियों को सेव वाटर, सेव एनर्जी, सेव वाइल्ड आदि के बारे में जानकारियां दी जाती हैं. परंतु देश के 80 प्रतिशत किसानों के साथ पर्यावरण के महत्वपूर्ण मुद्दे को लेकर न तो संगोष्ठी होती है न ही उन्हें पर्यावरण संरक्षण की तकनीक से जोड़ा जाता है. जिस दिन इस कमी को पूरा कर दिया जाएगा उस दिन से कृषि से जुड़ी अधिकांश समस्याएं समाप्त हो जाएंगी. वास्तव में इस प्रकार की समस्याएं कानून की सख्ती से नहीं बल्कि किसानों के बीच जाकर जागरूकता फैलाने से समाप्त होंगी. (चरखा फीचर)

पुस्तक समीक्षा

राग तेलंग

समीक्षक

विश्वेश के पंखों पर लिखीं आयतें

हाल ही में मुझे एक नायाब किताब भेंट स्वरूप मिली। ऐसी किताबें हमेशा से कम ही हुआ करती हैं,जिनकी ग्रेविटी कुछ ऐसी हो कि आप पहली ही बैठक में उसे पूरा पढ़ डालें। इसके कारण में मुख्यतः दो बातें सन्निहित हैं। पहला है उसका पोएटिक कंटेंट जो आपको इस तरह बांध लेता है कि आपको बर्दाश्त ही नहीं होता कि संपूर्ण पाठ के दौरान समय भी ख़लल डाले। दूसरी बात है लव एट फर्स्ट साइट। ऐसी किताब जिस पर से नज़र हटाने को दिल ही न करे, नयनाभिराम। यह जो एक किताब मेरे पास पहुंची है,यह ऐसी ही नज़र में ठहर जाने वाली किताब है। एक शेर कहीं पढ़ने में आया था-तुम मुख़ातिब भी हो,तुम करीब भी हो,तुमको देखें कि तुमसे बातें करें। आज ऐसी ही एक कविता पुस्तक की बात होगी।

विश्वेश,विश्वेशवर या विश्वनाथ देवाधिदेव महादेव का वह सबसे ग्लोरियस और पावरफुल फॉर्म है जिसमें उन्हें लॉर्ड ऑफ यूनिवर्स के रूप में देखा जाता है,पूजा जाता है। उनके इसी स्वरूप की स्थापना सप्तपुरी काशी में है। बहुत कम लोग ऐसे पाए जाते हैं जो अपने नाम,काम और आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित कर क्रिएटिविटी के क्षेत्र में उतरते हैं। यह तादात्म्य या संगम बहुत बाद में जाकर स्थापित हो पाता है। मेरे अनुजवत डॉ. विश्वेश विनायक ठाकरे उदीयमान कवि हैं और ऊपर कही गई बात उन पर अक्षरशः लागू होती हैं। हाल ही में सुंदर कलेवर और प्रकाशन की गुणवत्ता लिए आईसेक्ट पब्लिकेशन से उनका पहला कविता संग्रह 'पंखों पर लिखीं आयतें' आया है।

दिलचस्प शीर्षक का यह कविता संग्रह पढ़ने में भी उतना ही दिलचस्प है। आज की युवा पीढ़ी कविता से जुड़ती चली जा रही है तब यह सवाल साहजिक है कि आखिर कविता क्या ऐसा काम करती है, और भला कविता की किताबों में होता क्या है! आज के डायनामिक युवाओं की गतिज भाषा में आज की बात करेंगे। अब सारी चीज़ों के सलीके बदल गए है टाइम थ्रिंक हो गया है और सारी क्रियाएं उलट-पुलट हो चुकी हैं। जैसे पढ़ना देखना हो गया है,चलना दौड़ना हो गया है ,पीना ड्रिंक करना हो गया है वगैरह-वगैरह। आजकल की पोएट्री बुक्स में जिन रचनाओं को बैकव्यू मिरर के नजरिये से युवा पाठक पढ़ता है उनमें साफ़ समझ आता है कि उन यादों के झरोखों के किरदार इस दौर के नहीं हैं,तब के हैं जब सितारे ब्लैक एंड व्हाईट रोशनी में दिखते थे,जीवन यंत्रों से लैस नहीं था,लोगों के पास खाली वक्त था। कुल मिलाकर लगता है आज का राइटर यादों की सांकल की मदद से नई पीढ़ी का दरवाज़ा खटखटा रहा है। आज की पीढ़ी का यह भी मानना है कि आधुनिक शैली की रचनाएं पोएट्री बुक्स से गायब-सी हैं। लेकिन एक तरह से ये शिकायत बेमानी-सी है। हम सबके अनुभव या यादें एक से ही होते हैं। जैसे जॉब में एक्सपीरियंस का महत्व है,वैसे ही तजुर्बा हर लेखक के लेखन का एक अटूट हिस्सा होता है। एक लेखक अपनी पोएट्री में इसी सब का प्रतिबिम्ब रचनाओं में दिखाता है। इससे पैदा हुई बेचैनी एक ओर पाठक को रोमांचित या असहज तो करती ही है,साथ ही आगे बढ़ने का सबब भी प्रदान करती है और यही उन रचनाओं की ताकत है।

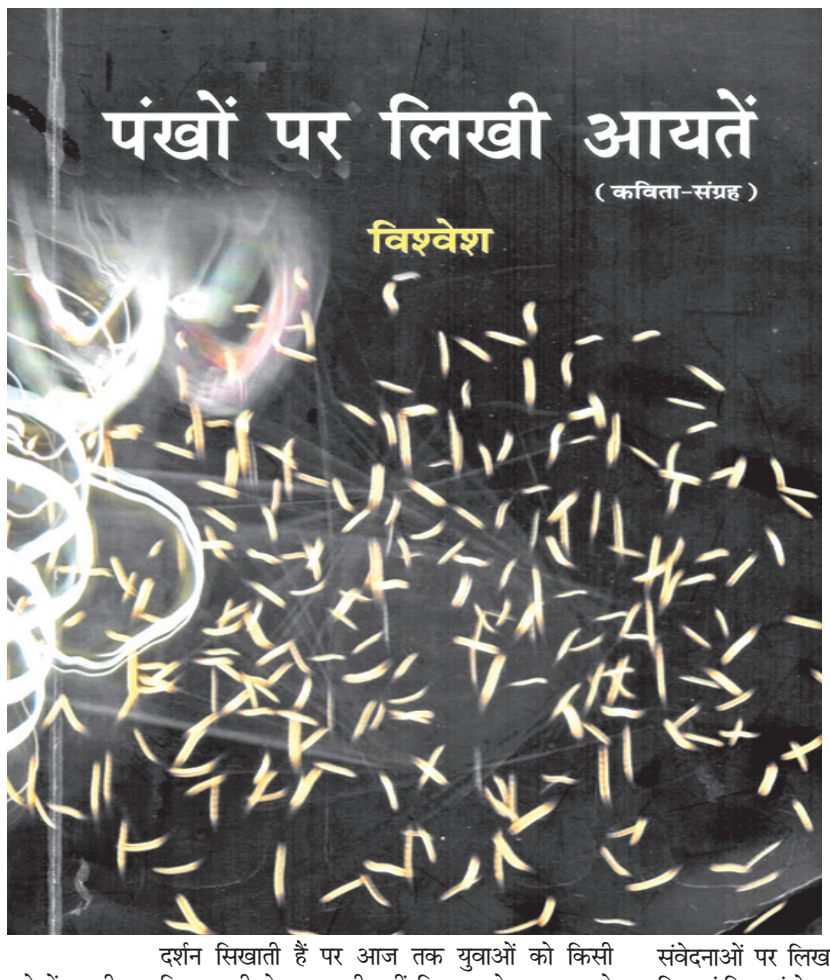

यहां मैं कविता के विभिन्न पहलुओं के बारे में अपनी उत्सुकताएं भर प्रकट कर रहा हूं, 'पंखों पर लिखीं आयतें' कविता संग्रह के बहाने लिखा गया यह समीक्षात्मक आलेख कई अनुमानों से भरा है,उम्मीद है रूचिकर लगेगा। लोग कहते हैं कि स्कूल-कॉलेजों के साहित्य की टेक्स्ट बुक ही काफी कुछ साहित्य या जीवन दर्शन सिखाती हैं पर आज तक युवाओं को किसी शिक्षाशास्त्री ने बताया ही नहीं कि एक टेक्स्ट बुक से अलग कोई बुक एहसासों की भी हो सकती है, जिसे समकालीन पोएट्री कहते हैं,जिसे कोई भी स्टूडेंट पढ़े तो थोड़ा-सा इंसान तो हो ही जाए। बल्कि मैं तो कहूंगा कि स्टेथोस्कोप का काम करने वाली इस विधा से समकालीन गुरूजियों को भी वाकिफ कराया जाए ताकि हमारा कंसर्न आज की पीढ़ी तक भी पहुंचे,क्योंकि सिर्फ गुज़रे ज़माने के साहित्य को पढ़कर आज के समय की धड़कन को महसूस करने का दावा करना एक मज़ाक के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता। ये उसी समझ का नतीजा है कि आज का इंसान समझता है कि प्रकृति उसी के लिए बनी है और उसके जीवन का उद्देश्य प्रकृति के दोहन के अलावा और कुछ है ही नहीं। आज के समय की दिखती ऐसी समझ से ऐसा लगता है कि संरक्षण और किफ़ायत से प्रकृति के साथ रिश्ता रखने का काम एलियंस का है हमारा नहीं। तभी तो आज की बिखरी-बिखरी-सी कविताई में लोगों को दिखाई दे रहा है कि प्रकृति चारों तरफ अनुपस्थित है,ऐसे में कवि कांक्रीट के जंगल की कवितायें लिखने से बचे भी तो कैसे। आज प्रकृति और विशुद्ध मानवीय संवेदनाओं पर लिखना जोखिम भरा है और वर्चुअल पोएट कहलाने का खतरा मोल लेना है। लेकिन हर कवि है कि मानता नहीं! कई कवि प्रकृति और संवेदनाओं पर लिखने का जोखिम उठाते ही हैं। याद दिला दूं कि यहां ये बातें 'पंखों पर लिखीं आयतें' कविता संग्रह के बहाने हो रहीं हैं।

आज हम ऐसी किताब के बारे में बात कर रहे हैं जो कुछ महत्वपूर्ण यक्ष प्रश्न पाठक के मन-मस्तिष्क में छोड़ जाती है। इस आधुनिक दौर में गुज़रे दौर के किरदारों के बीच जाना बरास्ते 'पंखों पर लिखीं आयतें' आपको अच्छा लगेगा। यहां यह भी याद रखना होगा कि लेखक खुद शीर्षक 'पंखों पर लिखीं आयतें' में आस्था और विश्वास की प्रेरणा से उड़ान की बात कर रहा है। संग्रह की अधिकांश कविताएं स्मृतियों से उपजी आस्था से प्रेरित हैं, वहीं वे इसे विश्वास में परिणत कर नए दौर के संघर्षों के लिए खुद को तैयार करने की भी बात करती हैं। विश्वेश की लिखी इन आधुनिक शैली की कविताओं को उनकी शायरी भी कहा जा सकता है,नज़्म भी और छंदमुक्त कवितायें भी। उनकी सारी रचनाएं सलीके से कहने के विविध रूपों का विस्तार ही हैं। बस फर्क उनके शिल्प का है जो कि कविता फॉर्म में सामने आता है। हो सकता है कि कुछ लोग इस शिल्प-रूप में विश्वेश ठाकरे के कथ्य को कुछ अधिक गहराई से महसूस कर पाएं। हालांकि इसमें कोई शक नहीं कि बतौर कैरियर एक संपादक विश्वेश जी के लेखन में उससे अर्जित रवानगी या 'रिदम' का कौशल ज़्यादा प्रभावित करता है।

चलिए माना रिलैक्स होने के लिए ही सही,पोएट्री की कोई भी किताब विदाउट टेंशन तो पढ़ ही सकते हैं। अगर आप एकाध घंटा धैर्य के साथ बैठ सकते हों तो पोएट्री की कोई भी किताब हो एक सिटिंग में पूरी खत्म कर सकते हैं। तो आज के बाद पोएट्री ज़रूर पढ़िये ,पर किसी तरह सिर्फ वक़्त काटने के लिए या बोरियत दूर करने के लिए नहीं,कुछ सीखने के लिहाज़ से इन्हें पढ़ियेगा। क्योंकि सीखा,सिर्फ अकादमिक दुनिया की टेक्स्ट बुक से ही नहीं जाता हम कवि लोग भी अपना तजुर्बा बांटते हैं, कविता कहकर,शेर कहकर, गीत कहकर। कविता साबुन है, नरम धूप है,सयानों का दुलार है। पढ़ना मेडिटेशन का ही एक रूप हैं ऐसे में आप अपने साथ होते हैं,एक नाव में बिल्कुल अकेले। यकीन नहीं आता तो विश्वेश का यह कविता संग्रह 'पंखों पर लिखीं आयतें' पढ़कर देखिये और कविता पढ़ने की आदत डालिए,थैंक्यू ज़रूर कहेंगे!

पुस्तकः पंखों पर लिखीं आयतें
लेखकः डॉ. विश्वेश ठाकरे
प्रकाशकः आईसेक्ट पब्लिकेशंस, भोपाल
मूल्यः रू. 150/-

मतदाता जागरूकता के लिए दौड़ा बैतूल

रन फॉर मतदान, रन फॉर मतदाता मैराथन में अनिकेत और शर्मिला रहे प्रथम

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में अधिक से अधिक मतदान के लिए मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से मैराथन का आयोजन किया गया था। पुलिस ग्राउंड से शुरू मैराथन में ऑब्जर्वर प्रदीप ठाकुर एवं पुलिस ऑब्जर्वर, स्वीप नोडल अधिकारी और मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया, सहायक कलेक्टर ऐश्वर्य वर्मा एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद ने भी मैराथन में भाग लिया।

मैराथन पुरुष वर्ग में अनिकेत यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने 12 मिनट 50 सेकंड में यह मैराथन पूरी की। इसके साथ जयप्रकाश कवड़े 12 मिनट 56 सेकंड के साथ द्वितीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग में सुर्मिला उईके ने 17 मिनट 44 सेकंड में मैराथन को पूरा कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर पिंकी रानी रही, जिन्होंने 18 मिनट 28 सेकंड का समय पूरा करने के लिए लिया। प्रथम स्थान पर रहे श्री यादव एवं सुर्मिला को तीन 3-3 हजार रूपए नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं स्वीप के नोडल अधिकारी श्री अक्षत जैन ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

जिला प्रशासन द्वारा अधिक से अधिक मतदान के लिए स्वीप के अंतर्गत प्रतिदिन नवाचार किया जा रहा है। इसी अनुक्रम में बैतूल के पुलिस ग्राउंड से शुरू हुई मैराथन नेहरू पार्क चौक, मैकेनिक चौक, रेलवे स्टेशन, बाबू चौक, जेएच कॉलेज, कालापाठा चौक से गणपति चौक होते हुए लक्ष्मी चौक से वापस पुलिस ग्राउंड पहुंची। मैराथन में पुरुष एवं महिलाओं सहित स्कूल, कॉलेज की छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मैराथन शुरू होने के पूर्व ऑब्जर्वर श्री प्रदीप ठाकुर ने खिलाडियों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। शहर के मध्य से होकर गुजरी इस मैराथन ने मतदाताओं का ध्यान आकर्षित किया। मैराथन में खिलाडियों के स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु डॉक्टर की टीम एंबुलेंस के साथ उपस्थित थी। टीम में डॉ. उईके, डॉ.अशोक बारंगे सहित अन्य डॉक्टर भी शामिल थे।

चॉकलेट लेने दुकान पर गए चार वर्षीय बालक ने निगला सिक्का, भोपाल रेफर किया गया

बैतूल। चॉकलेट लेने दुकान जा रहे चार वर्षीय बच्चे ने दो का सिक्का निगल लिया जिसके बाद बच्चे की हालत खराब हो गई परिजन बच्चे को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। घटना खेड़ी ग्राम चौकी की है जंहा क्रिस नामक चार वर्षीय बालक ने एक सिक्का निगल लिया था। बच्चे की मां कमला ने बताया की उसका लडक़ा क्रिस दुकान जा रहा था चॉकलेट लेने तभी खेलते खेलते उसने सिक्का निगल लिया जब उसे उल्टी होने लगी और बोलते नही बन रहा था तब उससे पूछा सिक्का कहां है तो उसने बताया सिक्का निगल लिया है तब उसे जिला अस्पताल लेकर आए।

जिला अस्पताल की ईएनटी सर्जन डॉक्टर हर्षिता ने बताया की बच्चे ने सिक्का निगल लिया है जिसका तुरंत गले और पेट का एक्सरे कराया गया है जिसमे सिक्का भोजन नली के ऊपर दिखाई दिया है चूंकि सिक्का बच्चे को पूरा बेहोश कर ही निकाला जा सकता है और जिला अस्पताल में ये सुविधा नहीं है इसलिए बच्चे को किसी बड़े अस्पताल या भोपाल रेफर करने को कहा है, बच्चे की स्थिति ठीक बताई गई है।

दिनों-दिन तूल पकड़ते जा रहा, जनपद के हरे-भरे बगीचे को उखाड़कर दुकान बनाने का मामला

जनपद सदस्यों ने जिला कलेक्टर के नाम सौंपा ज्ञापन

असलम अहमद मुलताई/संजय द्विवेदी बैतूल। मुलताई जनपद पंचायत के सामने बने हरे-भरे बगीचे को उजाड़कर दुकान बनाने का मामला दिनों-दिन तूल पकड़ते जा रहा है। यहां उल्लेखनीय है कि प्रदेश के प्रमुख अखबार सुबह सवेरे ने अपने पिछले अंकों में इस मामले को प्रमुखता से प्रकाशित किया था जिसके बाद अब इस मांग को लेकर जनप्रतिनिधिगण एवं क्षेत्र के अन्य पर्यावरण प्रेमी संगठनों ने मोर्चा खोल दिया है। यहां नियमों को ताक पर रख किए जा रहे दुकान निर्माण को लेकर मुलताई के पर्यावरण प्रेमी, सामाजिक संस्थाओं सहित जनपद सदस्यों में भी रोष बढ़ते ही जा रहा है। जिसको लेकर आज मंगलवार को जनपद सदस्यों ने जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन, मुलताई तहसीलदार अनामिका सिंह को सौंपा। ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि जनपद कार्यालय के सामने बने बगीचे के वृक्षों को काटकर बनाई जा रही दुकानों के निर्माण व भुगतान पर तुरंत रोक लगवाकर इसकी संपूर्ण जांच की जाए। जिला कलेक्टर के नाम सौंपे इस ज्ञापन में कहा गया है कि दो दशक पूर्व तत्कालीन सीईओ वीके त्रिपाठी द्वारा जनपद कार्यालय के समक्ष वर्षो की मेहनत और लाखो रुपए खर्च कर संपूर्ण क्षेत्र के सहयोग से आकर्षक बगीचे का निर्माण किया गया था। उनके कार्यकाल में लगाए गए पौधे वृक्ष बनकर लहलहाने लगे थे, जो कि जनपद कार्यालय की शान हुआ करते थे। इन हरे-भरे वृक्षों को पूरी तरह से उखाड़कर नष्ट कर फेंका गया, जिसके बाद अब यहां जनपद कार्यालय द्वारा पांच दुकानों का निर्माण किया जा रहा है जो कि औचित्यहीन है। बिना किसी ठोस कारण के हरे-भरे वृक्षों को काटा जाना अनुचित है।

ज्ञापन के अनुसार यह पांच दुकानें, 15 वित्त आयोग की राशि से बनाया जाना बताया जा रहा है जबकि नियमानुसार इस मद की राशि का उपयोग मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए किया जाना चाहिए। जानकारों का मानना है कि इन दुकानों का निर्माण नियमों को ताक पर रखकर बगैर टेंडर प्रक्रिया को पूर्ण किए किया जा रहा है। जनपद पंचायत द्वारा पांच दुकानों के निर्माण के लिए टेंडर प्रक्रिया अपनाने के बजाय कामथ ग्राम पंचायत को एजेंसी बना दिया गया है।

निजी हितों के लिए शासकीय राशि को लगाया जा रहा है चूना - इस ज्ञापन में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए गए हैं जिसमें कहा गया है कि निजी हितों के लिए हरे-भरे वृक्षों को काटकर जनपद कार्यालय की शोभा कार्यालय के सामने की महत्वपूर्ण भूमि को बर्बाद किया जा रहा है, साथ ही शासकीय राशि को चूना लगाया जा रहा है। उक्त मामले में शासकीय राशि का अपव्यय एवं कार्यालय के समक्ष की भूमि को अपने फायदे के लिए उपयोग करने की साजिश का आभास होता है।

क्या ग्राम पंचायत अपनी पंचायत छोड़कर नगरी क्षेत्र में कर सकती है निर्माण - जनपद सदस्यों ने ज्ञापन के माध्यम से पूछा है कि क्या, जनपद द्वारा बगीचे को कटवाकर दुकान निर्माण करने की स्वीकृति शासन व वरिष्ठ अधिकारियों से ली है। क्या ग्राम पंचायत कामथ अपनी ग्राम पंचायत के बाहर नगरीय क्षेत्र में भी निर्माण कार्य कर सकती है। इसकी जांच गंभीरता से नियमानुसार की जानी चाहिए। इस मामले की बारीकी से जांच कर दोषियों के खिलाफ तुरंत कार्यवाही की जानी चाहिए। ज्ञापन सौंपने वालों में जनपद सदस्य अंजना जीवन डोंगरदिए, जनपद सदस्य अनुबाला युवराज भीकोड़े, जनपद सदस्य सुमन शंकुलाल सलामे, जनपद सदस्य अजय भास्कर, जनपद सदस्य दिलीप निवारे, पूर्व सरपंच संघ अध्यक्ष पिंटू उमेश ठाकरे, निलेश साबले, गौतम देशमुख, डॉ. डोंगरे आदि प्रमुख है ।

मजदूर अपनी मेहनत से विकास के पहिए को है घुमाता

अटल सेना ने मजदूर दिवस पर किया मजदूरों को सम्मानित

बैतूल। दुनिया इंजीनियर्स, डॉक्टर्स और अन्य पेशे के लोगों को राष्ट्र के विकास का श्रेय देती रही है। इसमें विकास की सबसे अहम कड़ी मजदूर के योगदान को सदैव नजरअंदाज किया जाता रहा है। मजदूर दिवस के अवसर पर अटल सेना द्वारा इमारत में काम कर रहे मजदूरों का तिलक लगाकर, पुष्पमाला पहनाकर, उपहार देकर और श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। इस मौके पर अटल सेना के प्रांत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केंडू बाबा) ने कहा कि मजदूर के बिना किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा कि 45 डिग्री के तापमान में जब हम कूलर, पंखे और एसी में होते है तब भी मजदूर अपनी मेहनत से विकास के पहिए को घुमाता रहता है। केन्डु बाबा ने कहा कि दुर्भाग्य है कि भारत में आज भी मजदूरों की मजदूरी की दर बहुत कम है।

यह थे मौजूद- इस अवसर पर अटल सेना के वरिष्ठ पदाधिकारी श्रीमती कृष्णा नामदेव, मीना तोमर, ज्योति राठौर, कीर्ति नामदेव, सुनीता राठौर, समाजसेवी आशीष साहू, टीटू भार्गव, गिरीश करेरा, अर्पित भार्गव सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक और मजदूर शामिल थे।

किलेदार परिवार की बहू-बेटियों ने रक्तदान कर पेश की मिसाल

बैतूल। आरएसके ग्रुप द्वारा उनके निवास स्थान टैगोर वार्ड पर मंगलवार को वृहद रक्तदान शिविर का आयोजन किया। यहां 29 अप्रैल से राम कथा भी हो रही है। आरएसके ग्रुप के युवा समाजसेवी अमर सिंह किलेदार (आशु भैया) के जन्मदिन पर विगत 10 वर्षों से इसी प्रकार रक्तदान शिविर का आयोजन करते हुए मानव सेवा में बहुमूल्य सहयोग दिया जा रहा है। किलेदार परिवार का विचार है कि शिविर में किए गए रक्तदान से किसी भी व्यक्ति के अमूल्य जीवन की रक्षा की जा सकती है। अतः जनसामान्य को भी रक्तदान हेतु प्रेरित होना चाहिए। कोरोना वैश्विक महामारी की कठिन परिस्थितियों में भी अमर सिंह के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। परिवार का प्रयास है कि यह पुण्य कार्य अनवरत जारी रहे।

96 प्रतिशत से अधिक अति वरिष्ठ एवं दिव्यांग मतदाताओं ने किया घर पर ही मतदान: कलेक्टर श्री सूर्यवंशी

बैतूल। जिले के 85 वर्ष से अधिक उम्र के अति वरिष्ठ मतदाता एवं 40 प्रतिशत से अधिक विकलांगता वाले दिव्यांग मतदाताओं के लिए सोमवार को घर पर ही मतदान की व्यवस्था की गई थी। होम वोटिंग के प्रथम चरण में इस वर्ग के 96 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि जिले की 5 विधानसभा क्षेत्रों के 1236 मतदाता इन संवर्गों में चिन्हित किए गए थे। इन 1236 मतदाताओं में से 1190 मतदाताओं ने अपने मत का उपयोग किया। इस प्रकार शेष 46 मतदाता द्वारा 1 मई को द्वितीय चरण में मतदान किए जाने से शत प्रतिशत मतदान की संभावना है।

श्री सूर्यवंशी ने बताया कि घर पर मतदान का सोमवार को प्रथम चरण था। मतदान का द्वितीय चरण 01 मई को होगा। द्वितीय चरण में वे मतदाता मतदान कर सकेंगे जिन्होंने किसी कारणवश, प्रथम चरण में मतदान नहीं कर पाए थे।

सोमवार को जिले की 5 विधानसभा क्षेत्र बैतूल, मुलताई, आमला, भैंसदेही एवं घोड़ाडोंगरी में होम वोटिंग के अंतर्गत मतदाताओं को घर पर ही मतदान कराया गया। निर्वाचन आयोग की गाइड लाइन के अनुसार घर पर मतदान पूरी गोपनीयता के साथ कराया गया। सुरक्षा और पारदर्शिता, गोपनीयता के साथ मतदान को संपन्न कराने के लिए जहां सुरक्षाकर्मी उपस्थित थे तो पारदर्शिता के लिए वीडियोग्राफर भी मतदान दल के साथ थे।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिव्यांग और अति वरिष्ठ मतदाताओं से घर पर ही मतदान कराने का निर्णय मतदान के महत्व को दर्शाता है कि राष्ट्र निर्माण में एक-एक वोट कितना महत्व रखता है। यदि भारत का नागरिक है तो उसे मतदान अवश्य करना चाहिए। फिर वो मतदान केन्द्र तक नहीं आ सकता तो मतदान केन्द्र उसके घर तक पहुंच जाएगा। मतदान दल उसके घर पर ही मतदान करा सकेगा। परिस्थिति कुछ भी हो मतदान अवश्य करें।

उल्लेखनीय है कि बैतूल संसदीय क्षेत्र में 7 मई को संपन्न होने वाले चुनाव में बैतूल 5 विधानसभा क्षेत्र के साथ हरदा, टिमरनी और खंडवा के हरसूद भी शामिल है। इन 8 विधानसभा क्षेत्रों में 18 लाख 86 हजार 155 मतदाता अपने मतपत्र का उपयोग करेंगे। इनमें बैतूल जिले में 33309 युवा मतदाता, 85 वर्ष से अधिक 6340 और 12 हजार 829 दिव्यांग और पीडब्ल्यूडी मतदाता शामिल है। टिमरनी, हरदा और हरसूद में 51 हजार 816 युवा मतदाता और 85 वर्ष से अधिक उम्र के 9729 और दिव्यांग श्रेणी के 19 हजार 041 मतदाता शामिल है।

नरेन्द्र मोदी को पुनः प्रधानमंत्री बनाने भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक करें मतदान : डी.डी.उइके

भाजपा सरकारों ने गांव से लेकर देश का किया विकास : हेमंत खंडेलवाल

7 गांवों में दौरा कर ग्रामीणों-भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ ली बैठक

बैतूल। बैतूल - हरदा-हरसूद संसदीय क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी सांसद डी.डी.उइके एवं प्रदेश लोकसभा चुनाव संयोजक ,बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने सोमवार को बैतूल विधानसभा के बैतूल बाजार मंडल अंतर्गत 7 ग्रामों का तूफानी दौरा कर ग्रामीणों और भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें ली। भाजपा प्रत्याशी सांसद डी.डी.उइके नें बैठकों को संबोधित करते हुए कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव इसलिए महत्वपूर्ण है कि यह चुनाव गांव से लेकर देश के भविष्य का चुनाव है, विश्व पटल पर हमारे राष्ट्र,धर्म,संस्कृति को और अधिक मजबूत करनें का चुनाव है। इसलिए अबकी बार चार सौ पार एवं नरेन्द्र मोदी को पुनःप्रधानमंत्री बनानें का संकल्प पूरा करनें के लिए भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करें। भाजपा प्रत्याशी डी.डी.उइके एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें 29 अप्रैल को बैतूल बाजार मण्डल के बयावाड़ी,लोहारिया,जोड़ क्या,बघोली ,सरंडई, गोराखार और कोलगांव ग्रामों का दौरा किया। भाजपा प्रत्याशी संसाद श्री उइके नें कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राज में देश भर में विकास की गंगा बह रही है। उन्होनें मतदाताओं को आश्वस्त किया कि वे और बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल जन - जन के सुख-दुख में शामिल होनें के साथ ही गांव, शहर के चहुमुखी विकास और जन-जन को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे।

कांग्रेस ने सिर्फ बातें की, विकास नहीं किया- बैतूल बाजार भाजपा मंडल के सात ग्रामों में भाजपा कार्यकताओं ,ग्रामीणों की बैठकों में बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि कांग्रेस सरकारों के दौर में विकास को लेकर बातें तो खूब हुई लेकिन विकास के नाम पर कुछ नहीं हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार सहित म.प्र. सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से हर वर्ग और हर क्षेत्र में खूब विकास हो रहा है। जिसकी तस्वीर गांव-गांव नें नजर आ रही है। श्री खण्डेलवाल नें ग्रामीणों से कहा कि पक्की सड़के ,पक्के मकान, सिंचाई- पेयजल के लिए पानी, शिक्षा,स्वास्थ,बिजली रोजगार सहित शहर और गांव-गांव में हर सुविधा उपलब्ध करवानें का काम भाजपा सरकारों नें किया है। उन्होनें कहा कि आप लोगों नें मुझे विधायक बनाया और म.प्र में मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनी जिससे विकास कार्य और तेजी से हो रहे है। अब डी.डी.उइके को पुनः सांसद बनाकर नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनानें के लिए भाजपा के पक्ष में अधिक मतदान करें। जिसके बाद सांसद के साथ मिलकर विकास के नये कीर्तिमान बनायेगें।

80 प्रतिशत से अधिक मतदान कराने के लिए जुट जायें- भाजपा प्रत्याशी सांसद डी.डी.उइके एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें 7 ग्रामों में दौरे के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं से कहा कि सब काम छोड़कर 80 प्रतिशत से अधिक मतदान करवानें के लिए जुट जायें। प्रत्येक मतदान केन्द्र पर बूथ समितियों और पन्ना प्रमुखों की नियमित बैठक कर भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करवाने की ठोस रणनीति बनायें। जिससे प्रत्येक बूथ पर भाजपा के पक्ष में सरकारत्मक वातावरण बनें। मतदाताओं से डोर टू डोर संपर्क कर मतदान के लिए प्रेरित करें और पलायन कर बाहर गये ग्रामीणों को बुलाकर उनका मतदान सुनिश्चित करायें।

संसद,भाजपा प्रत्याशी डी.डी.उइके एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल के दौरे बैठकों में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे,भाजपा जिला महामंत्री सुधाकर पवार, विधानसभा प्रभारी मधु पाटनकर, जनपद उपाध्यक्ष कृष्णा लोखण्डे, नपउपाध्यक्ष सुरेश गायकवाड,बैतूल बाजार मंडल अध्यक्ष सुनील पवांर,पार्षद विजय पानकर, सरपंच नागोराव धोटे, कुण्डलिक डांगे,बूथ अध्यक्ष आशीष पंडाग्रे, महामंत्री विजय विश्वकर्मा, बूथ अध्यक्ष मंगलमूर्ति भोपते, आदि पंचायत प्रतिनिधि एवं ग्रामीण मौजूद थे।

मतदान दल,मतदान की समूची प्रक्रिया को स्वयं करके देखें-कलेक्टर एवं ज़िला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा

मतदान दलों का द्वितीय प्रशिक्षण आरंभ

धार। मतदान दलों के द्वितीय प्रशिक्षण का सिलसिला आज से सभी विधानसभा क्षेत्रों में तय स्थानों पर आरंभ हुआ। यह प्रशिक्षण तीन मई तक चलेगा। कलेक्टर एवं ज़िला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने प्रशिक्षण प्रदान करने वाले मास्टर ट्रेनर्स को निर्देश दिए हैं कि ऐसी व्यवस्था हो कि समूचा मतदान दल मतदान की प्रक्रिया को स्वयं करके देख ले। इस हेतु एक कक्ष में डमी मतदान केंद्र स्थापित कर उन्हें पूरी प्रक्रिया समझने और करने का अवसर प्रदान किया जाए।

पूर्वानुसार प्रशिक्षण की बुनियादी व्यवस्थाएं यथावत रहें।सुनिश्चित करें कि निर्धारित समय से प्रशिक्षण प्रारंभ और समाप्त हो। चूँकि इस बार PO, P1 के साथ P2, P3 भी होंगे अतः प्रत्येक मतदान अधिकारी को उनके कर्तव्य के अंतर्गत क्या करना है और कैसे करना है, यह स्पष्टता के साथ बताया जाए। पूरा दल EVM की कार्यप्रणाली, मॉक पोल, सीलिंग आदि की प्रक्रिया को स्वयं करके देख ले यह ही सुनिश्चित किया जाए।

EVM से सम्बंधित ट्रेनिंग वीडियो जो जिला स्तर पर बनाये गए हैं, उनका उपयोग प्रशिक्षण कक्षाओं में किया जाए।मतदान दलों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाया जाना सुनिश्चित करें ताकि उन्हें प्रशिक्षण सामग्री के साथ साथ आयोग के नवीनतम निर्देशों से भी अवगत कराया जा सके।

मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण के दौरान बीच बीच में प्रश्न पूछ कर आंकलन करते रहें यह भी तय करें कि प्रशिक्षण को एक पक्षीय न होने पाए।ट्रेनिंग वीडिओज़ को मतदान दलों के ग्रुप में शेयर करना सुनिश्चित किया जाए।मास्टर ट्रेनर्स अपने मोबाइल नंबर देकर व्यक्तिगत रूप से मतदान प्रशिक्षण से सम्बंधित कठिनाइयों का समाधान करने में अपना सहयोग प्रदान करें।मतदान दलों के लिए बनाए गए व्हाट्सएप ग्रुप एडमिन मोड पर ही रखे जाएं ताकि अधिकृत जानकारी ही प्रसारित हो।

भजन मंडली ने किया मतदाताओं को जागरूक

तिरला के सतीपुरा में आयोजित हुई भजन संध्या

धार। जनपद पंचायत तिरला द्वारा स्वीप गतिविधियां अंतर्गत मतदाता जागरूकता हेतु प्रतिदिन विभिन्न तरह की गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में सोमवार को भी जनपद पंचायत तिरला का नवाचार देखने को मिला, ग्राम पंचायत सतीपुरा, आमला, जुनापानी, कुआ, कछावदा, सिंधकुआ, बडलीपुराकला, सियारी, चाकल्या, हिंमतगढ़, ज्ञानपुरा अंतर्गत आने वाले ग्रामों मे मतदान का प्रतिशत विधानसभा चुनाव मे 70 प्रतिशत से कम होने से पंचायतों का एक क्लस्टर बनाकर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सविता झानिया, अनुविभागीय अधिकारी गंधवानी अंकिता प्रजापति, अनुविभागीय अधिकारी धार रोशनी पाटीदार के मार्गदर्शन में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत तिरला जिम्मी बाहेती द्वारा ग्राम पंचायत सतीपुरा मे लोकसभा निर्वाचन 2024 में मतदान का प्रतिशत बढ़ाने हेतु मतदाता जागरूकता कार्यक्रम अंतर्गत भजन संध्या के माध्यम से ग्रामीणों को मतदान के लिए जागरूक करने हेतु नवाचार किया गया। जिसमे ग्राम पंचायत उकाला की सद्गुरु कबीर भजन मंडली द्वारा भजनों के माध्यम से ग्रामीणों को मतदान करने हेतु उत्साह जगाया। इस नवाचार से ग्रामीणों में उत्साह देखा गया। कार्यक्रम में खंड स्तरीय अधिकारी एवम कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में अधिक से अधिक मतदान हेतु मशाल रैली का आयोजन कर सभी को मतदान की शपथ दिलवाते हुए अधिकारियों द्वारा भजन मंडली को सम्मानित किया गया।

मतदान केंद्रों में तेज गर्मी (लू) से बचाव के लिए रहेंगे समुचित प्रबंध

धार। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने सभी कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देशित किया है कि सभी मतदान केंद्रों में तेज गर्मी (लू) से बचाव के समुचित प्रबंध करें। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्रों में मतदाताओं के लिए शुद्ध पेयजल और बैठने के लिए पर्याप्त कुर्सियों व बेंच की व्यवस्था भी करें। श्री राजन ने मतदान केंद्रों में मतदाताओं को धूप से बचाने के लिए शेड लगाने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा है कि हर मतदान केंद्र में मेडिकल किट भी अवश्य रखें। इस मेडिकल किट में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से चर्चा कर ग्रीष्मकाल में उपयोगी सभी जरूरी दवाइयां उपलब्ध करायें। सभी मतदान दलों के पास ओआरएस पैकेट रहें। तेज गर्मी से बचाव के लिए भी अन्य जरूरी व्यवस्था करें। सेक्टर ऑफिसर की गाड़ी में सभी जरूरी दवाइयों के साथ-साथ समुचित संख्या में पैरा-मेडिकल स्टॉफ भी तैनात रहे।

शिशु गृह से पहली बार शिशु की दत्तक ग्रहण की कार्यवाही कर भावी माता-पिता को सुपुर्द किया गया

देवास /मोहन वर्मा । कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने देवास में मिश्रीलाल नगर एक्सटेंशन कैला माता मंदिर के सामने स्थित शिशु गृह सुर्यासखी सामाजिक विकास समिति का निरीक्षण किया। शिशु गृह में पिछले 5 माह से निवासरत शिशु का दत्तक ग्रहण में देने की कार्यवाही का अवलोकन किया। कलेक्टर श्री गुप्ता ने संस्था प्रबंधक श्रीमती जैमिनी वर्मा को शिशुगृह के संचालन में आवश्यक सुधार करने संबंधी दिशा-निर्देश दिये।

देवास के इस शिशु गृह से कलेक्टर श्री गुप्ता की उपस्थिति में पहली बार शिशु की दत्तक ग्रहण की कार्यवाही की गई एवं शिशु को दत्तक पूर्व पोषण देखरेख के लिए भावी माता-पिता को सुपुर्द किया गया। इस मौके पर महिला एवं बाल विकास से जिला कार्यक्रम अधिकारी/जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्रीमती रेलम बघेल, सहायक संचालक श्री लवनीत कौरी, डाईट प्राचार्य श्री हीरालाल खुशाल एवं संस्था के समस्त कर्मचारी मौजूद थे।

दुनिया के बड़े-बड़े देश भारत के विकास में अपना विकास देख रहे हैं : मनोज सोमानी

नागदा में भाजपा की पथ सभा हुई, कई नेता हुए शामिल

धार। पूरे देश में केंद्र की मोदी सरकार के 10 वर्ष के कार्यकाल को सराहा जा रहा है। लोगों ने मोदी को 2024 में तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का मन बना लिया है। हमे आम मतदताओं तक पहुंचकर मतदान करवाना है।

यह बात भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी ने यहां मंगलवार को कानवन मंडल के नागदा में पथ सभा को संबोधित करते हुए कही। सोमानी ने कहा कि आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। दुनिया के बड़े-बड़े देश भारत के विकास में अपना विकास देख रहे हैं। सबका साथ सबका विकास के मूलमंत्र के साथ मोदी सरकार ने देश मे जनकल्याण के काम किए। हमे आम मतदाताओं को सरकार की उपलब्धिया बताकर अधिक से अधिक मतदान करवाना है। पार्टी के कार्यकर्ता अब सारे कामकाज छोड़कर पार्टी के लिए समय निकालें और अपने अपने बूथों पर सक्रिय हो जाए।

किसान मौर्चे के प्रदेश महामंत्री व विधानसभा प्रभारी दिलीप पटोदिया ने युवाओं को मोदी के पंच प्राण के बारे में बताया और कहा कि पिछले 10 वर्ष में जिस गति और स्केल के साथ भारत में

विकास हुआ है, वो अकल्पनीय है, ऐतिहासिक है। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि सभा मे पूर्व विधायक खेमराज पाटीदार, भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष प्रहलादसिंह सोलंकी, राजेश अग्रवाल, शिवराम रघुवंशी सोहन बिल्लोरे, वरिष्ठ नेता शंकरलाल दगदी, संतोष मोदी आदि भी अतिथि रूप में मंचासीन थे। भाजपा के मण्डल अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ ने स्वागत भाषण दिया। पार्टी कार्यकर्ता इंदरसिंह पटेल, गोवर्धन राठौड़, जगदीश भाटी, गोपाल जाट, मुकेश फौजी आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। सभा का संचालन ईश्वरसिंह राठौर ने किया। आभार विनोद कोठारी ने माना। पथ सभा मे बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता व ग्रामीण उपस्थित थे।

सावित्री ठाकुर बदनावर विधानसभा में आज जनसंपर्क करेगी- भारतीय जनता पार्टी के विधानसभा मीडिया प्रभारी मनोज सोलंकी ने जानकारी देते हुए बताया कि भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर बुधवार को बदनावर विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर रहेंगे। वे सुबह 10 बजे कानवन पहुंचेंगे। इसके बाद सेमलिया, छो, बोराली, साकतली, बखतगढ, मांगलिया, छायन, संदला, तिलगारा, रूपाखेड़ा, मुलथान, धमाना, काछीबड़ौदा, कारोदा, जवासिया, पालिबड़ौदा, ढोलाना, पँचकवासा, कंकराज, बालोदा, पिटगारा व घटगारा पहुंचकर जनसंपर्क करेगी। इस दौरान उनके साथ पार्टी के नेता मंडल अध्यक्ष पदाधिकारी व कार्यकर्ता रहेंगे।

मैराथन दौड़ में दिया मतदान का संदेश

देवास/मोहन वर्मा। स्वीप गतिविधि में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। 'चुनाव का पर्व देश का गर्व' अन्तर्गत मंगलवार को सुबह 7.30 बजे स्थानीय सयाजी द्वार से मैराथन दौड़ (रन फॉर डेमोक्रेसी) का आयोजन जिला प्रशासन एवं नगर निगम द्वारा किया गया।

मैराथन दौड़ को सयाजी द्वार पर निगम सहायक यंत्री दिनेश चौहान ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मैराथन दौड़ शहर के एमजी रोड, तहसील चौराहा, नॉवेल्टी चौराहा, सुभाष चौक, गांजा भांग चौराहा, शालिनी रोड से होती हुई जवाहर चौक पहुंची। जहां रैली का समापन हुआ। रास्ते में स्कूली छात्र-छात्राओं ने मतदाताओं को जागरूक करने के लिए 'सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो' सहित अन्य नारे लगाए।

आयुक्त रजनीश कसेरा ने बताया कि मैराथन दौड़ (रन फॉर डेमोक्रेसी) का आयोजन जिला प्रशासन, नगर निगम व खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा किया गया। निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया। इस अवसर निगम सहायक यंत्री दिनेश चौहान ने कहा लोकसभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदाता अपना वोट दे, इसके लिए जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मैराथन दौड़ में स्कूली छात्र-छात्राओं ने भी शामिल होकर मतदाताओं से शत-प्रतिशत मतदान करने की अपील की। इस प्रकार के आयोजन आगे भी जारी रहेंगे।

नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एम्बेसेडर अमित राव पवार ने कहा कि निर्वाचन में एक-एक वोट कीमती होता है। यह लोकतंत्र की बहुत सुंदर व्यवस्था है, कि हमें अपने प्रतिनिधि को चुनने का अवसर प्राप्त होता है। आओ हम सभी सारे काम छोड़कर सबसे पहले वोट देने का संकल्प लें। इस अवसर पर निगम उपयंत्री दिलीप मालवीया, सहायक स्वास्थ्य अधिकारी भूषण पवार, ओम प्रकाश पथरोड़, रवि गोयनार, स्वच्छ भारत मिशन से विशाल जोशी, अरुण तोमर सहित गौरव कदम, अनिल श्रीवास्तव, जावेद पठान, सुधीर टोप्पो ,युनुस खान, अजीम शेख आदि उपस्थित रहे।

पार्टी, संगठन और कार्यकर्ता ही जिताता है चुनाव : वीडी शर्मा

मुरैना। सीएम मोहन यादव ने मुरैना लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर के समर्थन में श्योपुर जिले के विजयपुर एवं प्रेमसर में आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के विकास में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। हर क्षेत्र में विकास हुआ है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि देशभर से एक ही आवाज उठ रही नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है। एक परिवार में सिमटी कांग्रेस पार्टी जातियों में भ्रम फैलाने का कार्य कर रही है, इसलिए कांग्रेस पार्टी के दोहरे चरित्र के लोगों से सावधान रहें। भाजपा लोकसभा चुनाव को लेकर मैदान में है और चुनाव जिताने में पार्टी संगठन और कार्यकर्ता ही मुख्य भूमिका निभाता है। इस दौरान कांग्रेस पार्टी से भाजपा में शामिल हुए विधायक रामनिवास रावत ने भी सभा को संबोधित किया।

प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि यह चुनाव कई मायनों में अलग है। भाजपा ने यहां से बेहद सहज, सरल व जनप्रिय नेता शिवमंगल सिंह तोमर के लोकसभा प्रत्याशी बनाया है। प्रत्याशी तो भाजपा में निमित्त मात्र होता है, मुख्य प्रत्याशी तो कमल का फूल होता है। कांग्रेस पार्टी में अब कोई रहना नहीं चाहता है। 2003 में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी, जिसने पूरे प्रदेश का विकास किया। इसी तरह 2014 में केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनी और बीते 10 सालों में इस सरकार ने हर गरीब के जीवन को बदल दिया है। हर गरीब के जीवन में खुशियां लाने का काम किया है।

नेशनल हाईवे पर फिर दुर्घटना, ट्रक के पीछे जा घुसी कार ,चार लोग घायल

बैतूल/ मुलताई। नागपुर नेशनल हाईवे 47 पर मल्हारा पंखा के पास सुबह करीब 3 बजे ट्रक ने पीछे से जा घुसी कार, चार लोग हुए घायल, एक गंभीर। प्रभात पट्टन विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत आने वाले मल्हारा पंखा के पास मुलताई नागपुर नेशनल हाईवे 47 पर आज सुबह-सुबह सड़क हादसा हो गया। जिसमें कार में सवार चार लोग घायल हो गए, जिसमें से एक महिला गंभीर बताई जा रही है। सड़क दुर्घटना की सूचना पाकर तत्काल 108 एम्बुलेंस पर तैनात ईएमटी दिलीप मालवी और पायलट राकेश नागवंशी मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि बैतूल से नागपुर जा रहा एक परिवार की कार अचानक से सामने चल रहे ट्रक में पीछे से जा घुसी। कार चला रहे व्यक्ति ने बताया कि वे ब्रेक लगा रहे थे, लेकिन ब्रेक की जगह एक्सीलरेटर दब गया। जिसके कारण गाड़ी रुकने की बजाय और तेज हो गई और ट्रक में पीछे से जा घुसी। इस हादसे में कार में सवार चार लोग घायल हो गए। जबकि उनमें से एक महिला प्रणिका को गंभीर चोटें आई है। उन्हें परिजन निजी वाहन से नागपुर ले गए।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमश्वरी पटले ने किया बजरिया स्कूल तोड़कर बनने वाले ऑडिटोरियम स्थल का निरीक्षण..

अतिक्रमणकारी का स्वप्न होगा पूर्ण..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

नगरपालिका की स्वामित्व वाली भूमि पर ऐतिहासिक रहे उस शाला भवन को जमींदोज करने का बीड़ा उठा लिया गया है जिस स्कूल में जगतगुरु शंकराचार्य तक आएं थे। कहां ऐतिहासिक धरोहर बचाने का प्रयास नगर के मूर्धन्य गणमान्य और जनप्रतिनिधि करते हैं शिक्षाविद के पुत्र ही इस धरोहर को नेस्तनाबूद कर देना चाहते हैं क्योंकि नगरपालिका की इस जमीन के एक बड़े हिस्से पर जनप्रतिनिधि के भाई का जबरिया अतिक्रमण है। उच्च न्यायालय ने दायर याचिका का फैसला जब आए तब आयेगा लेकिन तब तक सबकुछ मटियामेट हो चुका होगा। नगर की

बेशकीमती भूमि में शामिल नगरपालिका के इस भूखण्ड को बचाने के लिए पूर्व नपाध्यक्ष अखिलेश खंडेलवाल सहित नगर के कुछ अन्यों ने जमकर कोशिश की लेकिन प्रशासन तक ने इस मसले पर गंभीरता से विचार नहीं किया.. कलेक्टर के वस्ते में आज भी नजूल अधिकारी का एक पत्र नर्मदा शिक्षा समिति के उस आवेदन को निरस्त करने हेतु लंबित रखा गया जिसमें समिति प्रबंधक भवानी शंकर शर्मा ने जमीन आवंटन की अव्यवहारिक मांग कर रखी थी, इतना ही नहीं समिति प्रबंधक ने नगरपालिका के स्वामित्व वाली भूमि मावजी भाई चावरा से खरीदना बताकर जाली दस्तावेजों के जरिए नजूल में नामांतरण का आवेदन किया था नजूल अधिकारी आरएल भम्मानी की पारखी नजरों ने मामले की तहकीकात कर बाकायदा आवेदन ही निरस्त कर कागजों की सत्यता को लेकर रजिस्टार को लिखे जाने के बाद भी अरबों की जमीन के इस रकबे पर गिद्ध दृष्टि रखने वाले समिति के चंगुल से यह जमीन नगर वासी सहित पूर्व नपाध्यक्ष अखिलेश खंडेलवाल बचा पाने में सफल नहीं हो पाए। मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमश्वरी पटले ने आज बजरिया प्राथमिक स्कूल में बनने वाले ऑडिटोरियम का निरीक्षण किया गया एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने बताया यहां ऑडिटोरियम का निर्माण यथाशीघ्र शुरू होने वाला है इस मौके पर सहायक यंत्री रमेश वर्मा एवं महेंद्र तोमर उपस्थित रहें..

राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों की संयुक्त समीक्षा बैठक संपन्न

लोकसभा निर्वाचन के निर्विघ्न एवं निष्पक्ष रूप से संपादन में राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है : कलेक्टर

चेक पॉइंट्स पर लगाए गए बैरिकेट्स पर रेडियम अवश्य लगाएं

धार। लोकसभा निर्वाचन में अवैध शराब, धन एवं अन्य आपत्तिजनक वस्तुओं की धर पकड़ के लिए विभिन्न स्थानों पर बैरिकेट्स लगाए गए हैं और निगरानी दलों द्वारा वाहनों की चेकिंग की जा रही है। इन बैरिकेट्स पर रेडियम अवश्य लगाया जाए। जिससे रात्रि में किसी प्रकार की दुर्घटना होने की संभावना ना हो। उक्त निर्देश कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा द्वारा सोमवार को जिला पंचायत सभागार में आयोजित राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों की संयुक्त समीक्षा बैठक में दिए गए।

कलेक्टर श्री मिश्रा ने निर्देश दिए कि मतदान पर्ची के वितरण के दौरान बी एल ओ मतदान हेतु आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी भी मतदाताओं को प्रदान करें। साथ ही निशक्त एवं 85 वर्ष से ऊपर के मतदाताओं के लिए घर जाकर वोटिंग मतदान करवाने का कार्य करवाने वाले दलों के साथ आवश्यक संख्या में पुलिसकर्मी भी साथ रहें। उन्होंने कहा की विगत चुनाव में निम्न प्रतिशत वाले मतदान केंद्रो पर मतदान प्रतिशत बढाने के लिए जागरूक करने की विभिन्न गतिविधियॉ आयोजित करें। स्ट्रांग रूम की सभी व्यवस्था भी सुनिश्चित करें। लोकसभा निर्वाचन के निर्विघ्न एवं निष्पक्ष रूप से संपादन में राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से निरंतर भ्रमण कर लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। साथ ही आदर्श आचरण संहिता का पालन करना सुनिश्चित करें।

बैठक में पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह द्वारा आपराधिक तत्वों पर कठोर कार्रवाई करते हुए निष्पक्ष और निर्भीक मतदान के लिए प्रेरित किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। उन्होंने कहा कि एसडीएम और एसडीओपी संयुक्त भ्रमण करें और मतदान केंद्रों का अवलोकन करें। अपने सुचना तंत्र को मजबूत करें। लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर कानून व्यवस्था संबंधी दायित्व का गंभीरतापूर्वक निर्वहन करें। साथ ही क्रिटिकल मतदान केन्द्रों का नियमित रूप से भ्रमण कर की गई कार्यवाही से अवगत कराएं।

बैठक में जिला पंचायत सीईओ सविता झानिया, उप जिला निर्वाचन अधिकारी अश्विनी कुमार रावत, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक इंद्रजीत बाकलवार सहित सभी एसडीएम, एसडीओपी एवं नोडल अधिकारी उपस्थित रहे।

हम महिलाओं को लखपति बनाएंगे,6 महीने में 30 लाख पद भरेंगे

भिंड में राहुल गांधी बोले-महालक्ष्मी योजना में हर महीने 8500 मिलेंगे

भोपाल। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भिंड में कहा, मोदी जी अरबपतियों को पैसा देते हैं तो कहते हैं विकास हो रहा है। जितना उन्होंने 10 साल में उनको दिया, हम आपको देने जा रहे हैं। महालक्ष्मी योजना के तहत देशभर की गरीब महिलाओं को लखपति बनाएंगे। हर महीने उनके खाते में 8500 रुपए डाले जाएंगे। 6 महीने में 30 लाख सरकारी पद भरे जाएंगे। राहुल गांधी ने भिंड-दतिया लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी फूल सिंह बरैया के पक्ष में एमजेएस मैदान पर चुनावी सभा की। राहुल ने हाथ में संविधान लेकर कहा- ये मामूली किताब नहीं है। आजादी के पास किसानों, गरीबों, मजदूरों, पिछड़ों, आदिवासियों को जो भी कुछ मिला है इस किताब के कारण मिला है। अब पीएम ने अमित शाह ने और उनके सांसदों ने मन बना लिया है कि वो चुनाव जीतेंगे तो इस किताब को फाड़कर फेंक देंगे। 30 सरकारी लाख पद खाली पड़े हैं। हम 6 महीने में आपके हवाले कर देंगे। सेना में युवा जाते हैं। सबसे ज्यादा भिंड से। मोदी जी ने दो तरह के जवान बना दिए। एक को कैंटीन और अच्छी सैलरी मिलेगी। दूसरा जिसे ये नहीं मिलेंगे। एक को जवान दूसरे को अग्निवीर कहते हैं। आप सोचिए दो लोगों को युद्ध में भेज रहे हो, एक से कह रहे हो आपको कुछ हुआ तो हम आपके परिवार की रक्षा करेंगे। और दूसरे जवान से कह रहे हैं, आपको कुछ हुआ तो कोई पेंशन और मदद नहीं मिलेगी। शहीद का दर्जा भी नहीं मिलेगा। मोदी जी ने सेना का अपमान किया है।

हमारी सरकार हर ग्रेजुएट को अप्रेंटिसशिप कराएगी: अरबपतियों के बेटे अपने पिता की कंपनियों में अप्रेंटिसशिप करते हैं, उनको पैसा मिलता है। ये उनको कंपनी में डालने का मौका होता है। हमारी सरकार दुनिया की पहली सरकार होगी जो हर ग्रेजुएट को ये अधिकार देने जा रही है। आप सरकार से एक साल की गारंटी की नौकरी मांग सकते हो। हमने मनरेगा लागू की तो मीडिया ने कहा, गरीबों की आदत बिगाड़ रहे हैं। मोदी जी अरबपतियों को पैसा देते हैं तो कहते हैं विकास हो रहा है। जितना उन्होंने 10 साल में उनको दिया, हम आपको देने जा रहे हैं। महालक्ष्मी योजना करोड़ों महिलाओं को लखपति बनाने की योजना। महिलाओं के लिए महालक्ष्मी योजना होगी, हम सीधे बैंक अकाउंट में पैसा डालेंगे। हर गरीब परिवार की लिस्ट बनेगी। हर परिवार से एक महिला का नाम चुना जाएगा। साल में 1 लाख रुपए दिए जाएंगे। हर महीने 8500 रुपए हर महीने 1 तारीख को सरकार आपके खाते में डालेगी। मीडिया किसानों और महंगाई की बात क्यों नहीं करती। गरीबों की बात नहीं करती। कहीं नहीं है। मैंने इनको आपका मित्र कहा, लेकिन ये आपके मित्र नहीं हैं। 24 घंटे मोदी जी का चेहरा दिखेगा। मैं आपसे बात करूंगा, मीडिया नहीं दिखाएगा। मोदी अगर 22-25 अरबपति बना सकते हैं तो कांग्रेस करोड़ लखपति बना सकती है। 21वीं सदी में आप बाहर जाते काम करते हो, हिंदुस्तान में महिलाएं भी मजदूरी करती हैं, जॉब करती हैं। महिलाएं आठ घंटे बाहर तो आठ घंटे घर में भी काम करती हैं। इंडि गठबंधन की सरकार इन महिलाओं को घर में काम करती हैं, पैसा देने जा रही है। दो-तीन अरबपतियों को सारा का सारा धन दिया जाता है। रेलवे देखो अडाणी, सोलर पावर देखो अडाणी। किसान जानता है, हमारे जेब से पैसा निकालने की कोशिश हो रही है। मोदी कहते हैं आतंकवादी है। ये हालत है देश की। नोटबंदी की, गलत जीएसटी लागू की। आज हिंदुस्तान में 45 साल से सबसे ज्यादा बेरोजगारी है। हर युवा ये बात जानता है। सबसे ज्यादा महंगाई आज है।

राम मंदिर के उद्घाटन में एक भी किसान नहीं था

22 लोग हैं, बीजेपी के मित्र। नरेंद्र मोदी से मिलते हैं। राम मंदिर के उद्घाटन में सारे वहां बैठे थे। आपने वहां किसी गरीब को देखा। वहां हजारों करोड़ वाले लोग थे। वहां, बॉलीवुड वाले थे, क्रिकेट टीम थी मगर एक किसान नहीं दिखा। संसद का उद्घाटन हुआ। आदिवासी राष्ट्रपति को बुलाया ही नहीं जाता। उनसे कहा जाता है न तुम संसद के उद्घाटन में आओगे, न राम मंदिर के। आप आरक्षण के खिलाफ नहीं है तो प्राइवेटाइजेशन क्यों किया। अग्निवीर योजना क्यों लाए? आप अरबपतियों का कर्जा माफ करते हो। 16 लाख करोड़ रुपया, 22-25 लोगों का नरेंद्र मोदी जी ने माफ किया है। मैं पूछता हूं कितने मजदूरों का कर्जा माफ किया। दुनिया में कोई शक्ति नहीं है जो इसको बदल सके। ये हिंदुस्तान के लोगों की आत्मा है। कांग्रेस और आंबेडकर ने हिंदुस्तान की जनता से मिलकर लड़ाई की और से संविधान बनाया। इसको ऐसे मिटने नहीं देंगे। राहुल ने हाथ में संविधान लेकर कहा- ये मामूली किताब नहीं है। आजादी के पास किसानों, गरीबों, मजदूरों, पिछड़ों, आदिवासियों को जो भी कुछ मिला है इस किताब के कारण मिला है। अब पीएम ने अमित शाह ने और उनके सांसदों ने मन बना लिया है कि वो चुनाव जीतेंगे तो इस किताब को फाड़कर फेंक देंगे। कांग्रेस पार्टी, INDIA गठबंधन संविधान को बचाने का काम कर रहा है।

देश की जनता ने देश में फिर एक बार मोदी सरकार बनाने का मन बना लिया है

कांग्रेस एक डूबता हुआ जहाज है और इस जहाज को डूबने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती

खंडवा/खरगोन । केन्द्रीय रक्षा मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को मध्यप्रदेश के खंडवा और खरगोन में आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर भ्रष्टाचार तथा घोटालों के लिए निशाना साधा और आगामी चुनाव में भाजपा को प्रचंड बहुमत से विजयी बनाने का आह्वान किया। इन कार्यक्रमों में खंडवा प्रत्याशी श्री ज्ञानेश्वर पाटिल और बड़वानी प्रत्याशी श्री गजेन्द्र सिंह पटेल सहित अन्य नेतागण उपस्थित रहे। श्री सिंह ने कहा कि आदरणीय मोदी जी की सरकार ने पिछले 10 वर्षों में कैसा काम किया है वो भारत के जन-जन को पता है। पहले अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की बात को गंभीरता पूर्वक नहीं लिया जाता था लेकिन आज जब भारत बोलता है तो पूरी दुनिया कान खोलकर सुनती है। भारत का कद और हैसियत पिछले 10 सालों में बहुत बढ़ा है। रूस और यूक्रेन युद्ध के समय भारत के बहुत से बच्चे वहां फंसे हुए थे और हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री ने उस कठिन समय में रूस और यूक्रेन के राष्ट्रपतियों से बात करके साढ़े चार घंटे के लिए युद्ध को रूकवाकर 22000 बच्चों को यूक्रेन से सुरक्षित निकालकर भारत वापस लाया। ये है भारत की हैसियत जो पूरी दुनिया में तेजी के साथ बढ़ी है। आदरणीय श्री राजनाथ सिंह ने हाल ही में हुए मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्पष्ट बहुमत की डबल इंजन की सरकार बनाने के लिए जनता का आभार व्यक्त किया। एक देश,एक चुनाव को लेकर श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि बार-बार विधानसभा और लोकसभा चुनाव होने के कारण नेताओं और जनता दोनों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है लेकिन भाजपा ये संकल्प है कि यह सिलसिला अब बंद होना चाहिए और जो भी लोकसभा व विधानसभा चुनाव होने हैं वो 5 वर्षों में एक बार ही होने चाहिए। श्री सिंह ने विश्वास दिलाते हुए कहा कि विधानसभा और लोकसभा चुनाव एक साथ होंगे, चाहे उसके लिए हमें कोई भी संशोधन करना पड़े, हम करेंगें। जिस प्रकार अहिल्याबाई होलकर ने इस देश की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ठीक उसी प्रकार आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी महाकाल कॉरिडोर, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर और सोमनाथ मंदिर का सुदंरीकरण करवाकर भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का काम किया है।

केंद्रीय मंत्री श्री सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने 1984 के घोषणापत्र में बहुमत मिलने पर राम मंदिर का निर्माण करवाने का वादा किया था।

सेवानिवृत्त हुए स्पेशल डीजी पुरुषोत्तम शर्मा, एडीजी अनुराधा शंकर होंगी पदोन्नत

एडीजी (प्रशिक्षण) अनुराधा शंकर सिंह स्पेशल डीजी बनेंगी

भोपाल। मप्र पुलिस के स्पेशल डीजी पुरुषोत्तम शर्मा मंगलवार (30 अप्रैल) को सेवानिवृत्त हो गए। उनकी जगह एडीजी (प्रशिक्षण) अनुराधा शंकर सिंह स्पेशल डीजी बनेंगी। वह एक माह ही इस पद पर रहेंगी, क्योंकि 31 मई को वह भी सेवानिवृत हो रही हैं। इसके बाद उनकी जगह एडीजी (अजाक) राजेश गुप्ता पदोन्नत होकर स्पेशल डीजी बनेंगे। उधर, एडीजी बीबी शर्मा भी 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त हो गए। प्रदेश पुलिस के मुखिया डीजीपी सुधीर सक्सेना भी इसी वर्ष नवंबर में सेवानिवृत हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पुरुषोत्तम शर्मा प्रदेश पुलिस के सबसे वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी थे, पर सितंबर 2020 में पत्नी के साथ मारपीट का वीडियो वायरल होने के बाद सरकार ने उन्हें निलंबित कर दिया था। बहाल होने पर उन्होंने वीआरएस के लिए भी आवेदन किया था, पर सरकार ने अनुमति नहीं दी।

ये आईपीएस अधिकारी भी इस साल होंगे रिटायर

मई में एडीजी अनुराधा शंकर सिंह, जून में स्पेशल डीजी अशोक अवस्थी और पीटीआरआई में आइजी आरआरएस परिहार, जुलाई में स्पेशल डीजी संजय झा, सितंबर में स्पेशल डीजी सुषमा सिंह एवं एडीजी राजेश गुप्ता, अक्टूबर में एडीजी अनिल कुमार गुप्ता, आइजी आरके हिंगणकर और नवंबर में डीजीपी सुधार कुमार सक्सेना सेवानिवृत्त हो जाएंगे।

मुख्य सचिव सहित कई आईएएस अधिकारी इस वर्ष हो जाएंगे सेवानिवृत्त

मुख्य सचिव वीरा राणा सहित कई आइएएस अधिकारी भी इस वर्ष सेवानिवृत हो जाएंगे। वीणा राणा का रिटायरमेंट इसी वर्ष 31 मार्च को था, पर राज्य सरकार ने उन्हें छह माह ही सेवावृद्धि दी थी। दोबारा सेवा विस्तार नहीं मिलता तो वह सितंबर में सेवानिवृत्त हो जाएंगी। अध्यक्ष राजस्व मंडल अश्विनी कुमार राय इसी माह, पीईबी के अध्यक्ष सौरभ बंदोपाध्याय अगस्त, केंद्रीय प्रतिनियुक्ति में गए आशीष उपाध्याय सितंबर में और मलय श्रीवास्तव नवंबर में रिटायर हो जाएंगे।

मुरैना लोकसभा सीट

प्रदेश की इस सीट पर बीएसपी बिगाड़ सकती है 'खेल'

● बीजेपी-कांग्रेस का गेम, 'बहन जी' ने कर दिया दोनों दलों को बेचैन

भोपाल। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि एमपी में तीसरे चरण के मतदान में जिन 8 सीटों पर मतदान हो रहा है, उनमें से मुरैना पर कांग्रेस टक्कर की स्थिति में है। इस सीट पर इस बार नरेंद्र सिंह तोमर चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। उन्होंने दिसंबर 2023 के चुनाव में दिमनी से विधानसभा चुनाव लड़ा था और जीत हासिल की थी। फिलहाल वह मध्य प्रदेश विधानसभा में स्पीकर हैं। उनकी गैरमौजूदगी में कांग्रेस को सीट जीतने का मौका मिल रहा है। बताया जा रहा है कि प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार भाजपा के शिवमंगल सिंह तोमर को कड़ी टक्कर दे रहे हैं।

घटते जनाधार के बाद भी बीएसपी का अपना वोट बैंक: चंबल क्षेत्र में अपने घटते जनाधार के बावजूद बसपा भी अपने वोटबैंक के सहारे मुरैना सीट पर टक्कर की स्थिति में है। वैसे मुरैना ठाकुर बहुल सीट है, लेकिन दलित वोट भी अच्छी तादाद में हैं। फैक्ट की बात करें तो 2019 के लोकसभा चुनावों में बसपा के करतार सिंह भडाना का 11.37 प्रतिशत वोट शेयर बीजेपी और कांग्रेस के उम्मीदवार के बीच वोटों के अंतर से अधिक था। इससे पता चलता है कि बीएसपी अभी भी परिणाम को प्रभावित कर सकती है। 2008 में लोकसभा सीटों के परिसीमन तक मुरैना सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित थी। 2009 में सीटें अनारक्षित होने के बाद नरेंद्र सिंह तोमर ने कांग्रेस के राम निवास रावत के खिलाफ सीट जीती। इस चुनाव में भी बसपा उम्मीदवार बलवीर सिंह दंडोतिया, जो कि ब्राह्मण हैं, को 20 प्रतिशत वोट मिले थे, जो कांग्रेस और भाजपा के बीच वोटों के अंतर से कहीं अधिक थे। 2014 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के भतीजे अनूप मिश्रा ने बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़ा था और इस चुनाव में बीएसपी के बृंदावन सिंह सिकरवार दूसरे स्थान पर रहे थे और कांग्रेस उम्मीदवार गोविंद सिंह तीसरे स्थान पर खिसक गये थे।

कांग्रेस ने आखिरी बार 1991 में जीती ये सीट

जब यह सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित थी, तो भाजपा के अशोक अर्गल ने 1996 से 2004 तक 4 बार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। कांग्रेस ने आखिरी बार 1991 में सीट जीती थी जब पार्टी के बारेलाल जाटव ने चुनाव जीता था, लेकिन कांग्रेस को इस सीट पर कड़ी टक्कर मिलने की उम्मीद है और आलम ये है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, बीएसपी सुप्रीमो मायावती पहले ही मुरैना में जनसभाएं कर चुकी हैं और कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी 2 मई को एक जनसभा को संबोधित करने वाली हैं। इससे पता चलता है कि मुरैना में चुनावी लड़ाई दिलचस्प है और सभी को जीत की भी उम्मीद है। चुनावी गलियारों में एक और चर्चा है कि बीजेपी उम्मीदवार को नरेंद्र सिंह तोमर की सिफारिश पर टिकट मिली है। यही वजह है कि नरेंद्र सिंह तोमर भले ही खुद मैदान में नहीं हैं, लेकिन वह कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। कांग्रेस ने राज्य विधानसभा के अध्यक्ष के संवैधानिक पद पर रहने के बावजूद तोमर के प्रचार में हिस्सा लेने पर आपत्ति जताते हुए चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन आयोग ने कहा कि किसी राजनीतिक दल का सदस्य होने के नाते स्पीकर ऐसा कर सकते हैं। कांग्रेस प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार, बीजेपी नेता गजराज सिंह सिकरवार के बेटे हैं और ग्वालियर से कांग्रेस विधायक सतीश सिकरवार के भाई हैं। सतीश सिकरवार की पत्नी ग्वालियर की मेयर भी हैं। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में सिकरवार परिवार का राजनीतिक दबदबा और उनकी अपनी छवि उन्हें और उनकी पार्टी को उम्मीद देती है कि 1991 से भाजपा के कब्जे वाली सीट छीनी जा सकती है। बसपा प्रत्याशी रमेश गर्ग एक व्यापारी हैं और उन्हें बसपा के पारंपरिक वोटों के अलावा ऊंची जातियों और ओबीसी के वोट भी मिल सकते हैं और पलड़ा दोनों तरफ झुक सकता है।

हाउसिंग बोर्ड की तर्ज पर नगर निगम बनाएगा 15 मंजिला आवासीय इमारत, 120 करोड़ रुपये आएगी लागत

भोपाल। शहर में सस्ते और किफायती मकान बनाने वाला नगर निगम भी अब महंगे अपार्टमेंट बनाने की तैयारी कर रहा है। मप्र हाउसिंग बोर्ड की तर्ज पर नगर निगम पहली बार 15 मंजिला हाईराइज बिल्डिंग बनाने जा रहा है। हाउसिंग फार आल के तहत यह निगम का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट होगा। इस प्रोजेक्ट को लेकर टीएंडसीपी से अनुमति मिल गई है। अब फाइल रेरा में पंजीयन के लिए भेजी गई है। इसके वापस आते ही रिवेरा टाउन के पास रिक्त भूमि पर 15 मंजिला इमारत बनाने का काम शुरू कर दिया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि यह नगर निगम का सबसे महंगा प्रोजेक्ट होगा। इसमें रहवासियों को 61 लाख रुपये में थ्री बीएचके और एक करोड़ रुपये में फोर बीएचके फ्लैट मिलेगा। इसके निर्माण पर करीब 120 करोड़ रुपये लागत आएगी।

इस योजना के तहत होगा निर्माण

बता दें कि अब तक हाउसिंग फार आल (एचएफए) के तहत स्लम और नान स्लम वालों के लिए ही आवास बन रहे हैं। एचएफए प्रोजेक्ट को लोग सबसिडी वाले मकानों के रूप में ही देखते हैं, लेकिन अब इस प्रोजेक्ट को नगर निगम कमर्शियल रूप देने जा रहा है। संभवत देशभर में यह अपने आप में एक बड़ा प्रोजेक्ट होगा। इसमें सिर्फ दो श्रेणियां रखी हैं, पहली थ्री बीएचके और दूसरी फोर बीएचके है। यानी इसमें फ्लैट लेने की आम लोग हिम्मत नहीं कर सकते।

प्रोजेक्ट में होंगी ये खास सुविधाएं

इस 15 मंजिला इमारत में क्लब हाउस, कमर्शियल स्पेस, जागिंग ट्रैक, किड्स प्ले एरिया, लैंडस्केप गार्डन, रैन वाटर हार्वेस्टिंग, दो लिफ्ट स्ट्रेक्चर वाली और दो पैसेंजर के लिए, लिफ्ट और पूरे कैंपस एरिया के लिए पावर बैकअप, बैसमेंट में फोर व्हील्स के लिए अलग-अलग पार्किंग एरिया, पूरे प्रोजेक्ट में मार्डन फायर फाइटिंग सिस्टम के साथ सुरक्षित कैंपस रहेगा। थ्री बीएचके फ्लैट का एरिया 1348 वर्गफीट और फोर बीएचके का साइज 2401 वर्गफीट होगा।

कल से 16 जून तक बंद रहेंगे स्कूल, आदेश जारी

भोपाल। गर्मी ने आम लोगों को परेशान करना शुरू कर दिया है। गर्मी और लू को देखते हुए स्कूलों में गर्मी की छुट्टियों की घोषणा कर दी गई है। स्कूल शिक्षा विभाग के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को 1 मई से 15 जून और शिक्षकों को 1 मई से 31 मई तक ग्रीष्मकालीन अवकाश दिया जाएगा। छुट्टियों की संख्या घटाने का शिक्षक संगठनों ने विरोध किया है। शासकीय शिक्षक संगठन के कार्यकारी अध्यक्ष उपेन्द्र कौशल ने कहा कि अवकाश में कटौती के बदले अर्जित अवकाश की पात्रता नहीं रहेगी। जबकि अन्य विभाग में प्रतिवर्ष 30 दिवस अर्जित अवकाश और प्रत्येक माह के शनिवार को अवकाश की सुविधा दी जा रही है। इसके अलावा स्कूली विद्यार्थियों और शासकीय शिक्षकों को दशहरे पर 3 तो दीपावली पर 6 दिन का अवकाश मिलेगा। विद्यार्थियों व शिक्षकों का दशहरा के लिए अवकाश 11 से 13 अक्टूबर तक, दीपावली के लिए 29 अक्टूबर से 3 नवंबर तक और शीतकालीन अवकाश 31 दिसंबर 2004 से 4 जनवरी 2025 तक रहेगा।

इन तारीखों में भी रहेगा अवकाश

17 जुलाई: मुहर्रम
15 अगस्त: स्वतंत्रता दिवस
26 अगस्त: जन्माष्टमी
16 सितंबर: ईद-ए-मिलाद
2 अक्टूबर: गांधी जयंती (राष्ट्रीय अवकाश)
12 अक्टूबर: दशहरा
17 अक्टूबर: वाल्मिकी जयंती
31 अक्टूबर: दिवाली
15 नवंबर: गुरु नानक जयंती
25 दिसंबर: क्रिसमस

स्कूलों का विंटर ब्रेक 1 जनवरी 2025 से शुरू होगा और 15 जनवरी 2025 को खत्म होगा।